ओः
श्रीमते रामानुजाय नमः । श्रीवेंकटेशाय नमः ।

ब्रह्ममेध संस्कार एवं नारायणवलि पद्धति

प्रणम्य परमात्मानं वेंकटेशं पराङ्कुशः ।
नारायणवलि कुर्वे व्रह्ममेध समन्वितम्।।
अज्ञान नाशने दक्षां सर्वधर्म प्रवोधिनीम् ।
सर्व संमत सिद्धान्तां हारीतस्मृतिमाश्रये।।

व्रह्ममेध संस्कार और नारायणवलि श्राद्ध पद्धति
श्रीवैष्णव सम्प्रदायान्तर्गत गोवर्द्धन पीठ
परम्परा प्रविष्ट परमहंस अनन्तश्री
स्वामी राजेन्द्र सूरि चरणाश्रित
गया मण्डलान्तर्गत
सरौती मठाधीश
श्रीस्वामी पराङ्कुशाचार्य
द्वारा संकलित
एवम्
श्रीराम संस्कृत विद्यालय सरौती (गया)
द्वारा प्रकाशित

संवत् **2010**

श्रीमतेरामानुजाय नमः

विषय सूची

भूमिका
मरणासन्न कालिक सावधानी
नारायण वलि श्राद्ध क्यों
ब्रह्ममेध मूल वर्णन
ब्रह्ममेध संस्कार की सामग्री
नारायण वलि का क्रम

सूक्त संग्रह

नारायणानुवाक
विष्णु सूक्त
पुरुष सूक्त
सोम सूक्त
इन्द्र सूक्त
विष्णु गायत्री
मूल मन्त्र
आपोऽस्मान ऋचा
प्रोक्षण मन्त्र
विष्णु मन्त्र
वैकुण्ठ परिषदों के नाम
ब्रह्ममेध संस्कार
नारायण वलि मूल श्लोक

नारायण बलि का सविस्तार कृत्य

ब्राह्मण निमन्त्रण
कर्मपात्र निर्माण
कर्मापवर्ग दीप (घृत का)
मुख्य संकल्प
वैकुण्ठ तर्पण
शालिग्राम का पूजन
कलश स्थापन
कुश कण्डिका
अग्नि स्थापन
चतुर्गृहीत होम

द्वादश नारायण श्राद्ध
नित्यमुक्त सर्ववैष्णव श्राद्ध
दक्षिणादान विसर्जन प्रार्थनादि
ब्रह्मार्पण
वेदी
उपसंहार

श्रीमतेरामानुजाय नमः

भूमिका

श्रीसच्चिदानन्द घन स्वरूपिणे कृष्णाय चानन्त सुखाभि वर्षिणे
विश्वोद्भव स्थान निरोध हेतवे नुमो वयं भक्ति रसाप्तयेऽनिशम्।
कीटेषु कोटि शतजन्म सुमानुषत्वम् तत्रापि कोटि शतजन्मसु बाह्मणत्वम् ।
तत्रापि कोटि शतजन्मसु वैष्णवत्वम् तत्रापि कोटि शतजन्मसु मत्परत्वम्।।

यद्यपि इस संसार को लोग सर्वथा असार ही कहा करते हैं किन्तु कुछ सार तो अवश्य ही है । और वह है सार "धर्म"। "धारणाद्धर्म मित्याहुः।" यदि सृष्टि की सत्ता है तो धर्म से ही। और यही एक स्थिर पदार्थ भी है। वह धर्म मानव शरीर द्वारा होता है अतएव धर्म का साधन होने से मनुष्य का शरीर भी इस संसार में सार है। मानव शरीर में वैष्णव शरीर की सारता विशेष सिद्ध होती है क्योंकि "वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।" और ऐसे व्यक्तियों के ऊपर परमात्मा की विशेष कृपा होती है। इतना विशेष कि "यदि वातादि दोषेण मद्भक्ताः न च मां स्मरेत्। अहं स्मरामि मद्भक्ताः नयामि परमां गतिम्।" अर्थात् अन्त अवस्था में कफ पित्तादि के प्रभाव से आक्रान्त हो जाने के कारण मेरा भक्त मुझे याद नहीं करता तो वैसी अवस्था में मैं ही उसे याद करता और उत्तम गति देता हूँ।

"अहं भक्त पराधीनः" यह कहकर सर्वतन्त्र स्वतन्त्र परमात्मा भक्तों को और भी वड़भागी वना देते हैं तथा वछड़े के पीछे पीछे गौ की तरह भक्तों के पीछे पीछे परमात्मा चला करते हैं। अतः ऐसे भगवान के कृपापात्र श्रीवैष्णव और्ध्व दैहिक किया या श्राद्ध में भी विशेषता ऋषि महर्षियों ने देखी है और करना भी शिष्टाचार है। वृहद्हारीत का कहना है।

केशवार्पित सर्वागं शशिभं मङ्गला द्वयम्। न वृथा दाहयेत् विद्वान् ब्रह्ममेध विधिं विना।।

अर्थात् श्रीवैष्णवों का दाह संस्कार ब्रह्ममेध संस्कार पूर्वक हो और श्राद्ध प्रकरण में नारायणवलि श्राद्ध। किन्तु संहिताओं से पृथक उपरोक्त क्रियाओं की कोई पद्धति उत्तर भारत में प्रचलित नहीं मिलती जिसे पूर्ण ज्ञानाभाव ही कहा जा सकता है। इसलिए इस अभाव को दूर करने के निमित्त यह पद्धति प्रकाशित की जारही है।

मरणकालिक सावधानी

अर्थात् मरणासन्नावस्था में कफ पित्तादि दोषों के प्रभाव से प्राणी प्रायः व्याकुल ही रहता है। ईश्वर स्मरण तो दूर रहा स्वशरीर व्यापार भी भूल जाता है। ऐसी परिस्थिति में कोई कोई ही काम क्रोधादि रहित ज्ञानी ईश्वर शरणागत व्यक्ति अपना पूर्ण वोध रखते हैं और वैसे ही जन भगवान के विशेष कृपापात्र हैं। वे ही उच्च कोटि के व्यक्ति समझे जाते हैं। उन्हीं को परमात्मा स्वयं याद करते हैं।

दूसरे जो भगवान से सर्वदा विमुख रहने वाले हैं उन्हें तो अन्तिमावस्था में स्मरण दिलवाने पर भी भगवान याद नहीं होते क्योंकि आदि अभ्यास से वे प्रभावित रहते हैं।

यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजन्त्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद् भाव भावितः। गी 8।6।

यदि परमात्मा स्वयं स्वकृपा वस या घुणक्षर न्यायतः याद दिलाने से याद हो गये तो उन्हें भी मुनि दुर्लभ गति प्राप्त हो जाती है। किन्तु यह तो कभी ही और किसी को ही उपलब्ध हुआ ।

यद्यपि परमात्मा को निर्हेतुक कृपा द्वारा ही सवों की मुक्ति सिद्ध है। परगत शरणागति ही सब को मान्य है। फिर भी "**कर्मण्येवाधिकारस्ते.....** " के अनुसार जो भगवान के विशेष कृपापात्र हैं उन्हें तो लोकसंग्रहार्थ और जो भगवद्विमुख हैं उन्हें स्वउद्धारार्थ भगवान्नामों का सदा अनुसन्धान सिद्धोपाय है, जो कल्याणार्थ अनिवार्य है। अन्तकालिक क्षणिक भूल भी महान से महान अधःपतन का कारण वन जाता है और सावधानी इष्टपूर्ति का। अतः इन विषयों को ध्यान में रखते हुए मरणासन्न को तत्काल पञ्चगव्य गंगाजल और कुश मूल से नहला कर चन्दन घी लगा नवीन वस्त्र मालादि पहनाकर घर से वाहर लीपा पोता शुद्ध स्थान में कुशासनों के ऊपर जहाँ तुलसी वृक्ष और शालिग्राम भगवान हो, रखे। तथा अन्यान्य लौकिक चर्चाओं को छोड़ भगवत्संवन्धी चर्चा गीता रामायण विष्णुसहसनाम आदि का और यदि मरणासन्न वैष्णव महाभागवत हो तो भागवत श्रीभाष्य प्रवन्ध या अन्यान्य वैष्णव सांप्रदायिक ग्रन्थों का पाठ करे। भगवान का तीर्थ भी उसे मिलते रहना चाहिए और मरणासन्न में ब्रह्ममेध संस्कार पूर्वक उसकी दाह किया होनी चाहिए।

केशवार्पित सर्वाङ्गं शशिभं मङ्गलाद्वयम्। न वृथा दाहयेत् विद्वान् ब्रह्ममेध विधिं विना।।

नारायणबलि श्राद्ध क्यों

वृद्ध हारीत ने नारायणवलि श्राद्ध की जो महत्ता दी है उसे देखकर अवाक् ही रह जाना पड़ता है। इस श्राद्ध के द्वारा जव पापी से पापी का उद्धार होता है, उद्धार ही नहीं वल्कि परमपद की प्राप्ति होती है तो उससे दूसरा सुगम उपाय और क्या हो सकता है? यह जानने की वात है कि श्राद्ध मात्र का उद्देश्य मृतात्मा की शान्ति है चाहे वह प्रेत निमित्त हो या पितृ निमित्त । श्राद्ध की परिभाषा ः

प्रेत पितृंश्च निर्देश्य भोज्यं यत्प्रियमात्मनः। श्रद्धया दीयते यत्र दीयते तच्छ्राद्धं परिकीर्तितम्।।

व्यक्ति का अतिप्रिय भोजन श्रद्धापूर्वक दिया जाय उस क्रिया को श्राद्ध कहते हैं। यहाँ प्रेत शव्द से अमुक्तात्मा समझना चाहिये। जिसमें प्रेत और पितृ दोनों ही आ जाते हैं जिनका माध्यम अग्निष्वाता विश्वेदेव किया करते हैं। इन्हीं के द्वारा श्राद्ध में दिया गया पदार्थ अक्षय होकर प्रेत या पितरों को मिला करता है क्योंकि उनका सीधा सम्वन्ध विश्वम्भर से रहता है। अतः विश्वात्मा नारायण के उद्देश्य से दिया गया पिण्ड क्यों कर मुक्तिदायक नहीं होगा जवकि वे विश्व प्राणी की आत्मा हैं। प्रह्लाद ने कहा है ः

नह्यच्युतं प्रीणयतः वह्वायासोऽसुरात्मजाः । आत्मत्वात् सर्वभूतानां सिद्धत्वादिह सर्वतः ।भागवत 7।6।19।

अर्थात् हे असुरात्मजो अचयुत भगवान की प्रसन्नता में वहुत आयास परिश्रम नहीं है क्योंकि वे सभी प्राणियों की आत्मा है और सभी प्रकार से सिद्ध उपाय हैं। यही कारण है कि शास्त्रों नारायणवलि श्राद्ध की इतनी महत्ता दी गयी है वल्कि कुछ लोगों का तो कहना है कि प्रेतात्मा की मुक्ति के लिए तीन षोड़शी होनी चाहिए। मृत्यु के पश्चात् प्रथम अवयव (दशगात्र) श्राद्ध तक निकृष्ट, षोड़शी एकादशाह से सपिण्डन तक मध्यम षोड़शी और नारायण वलि तीसरी उत्तम षोड़शी है। अतः इसके विना श्राद्ध अधूरा रह जाता है। जो हो, पर यह सर्वमान्य है कि नारायणवलि शेष श्राद्धों में उत्तम श्राद्ध है। वृहद् हारीत में स्पष्ट शव्दों में लिखा है कि यह विशिष्ट धर्म है।

निर्वर्त्य विधिना धर्म समान्येनावशेषत ः । विशिष्टं परमं धर्म नारायणबलिं ततः ।। वृ हा अ 6 श्लो 1।
शेष श्राद्ध सामान्य धर्म है और नारायणवलि विशिष्ट एवं परं धर्म है। अतः शेष श्राद्धों को समाप्त कर मुक्ति आदि की कामना से नारायणवलि श्राद्ध अवश्य करें "**प्रकुर्याद वैष्णवैः सार्द्धं यथा शास्त्रमतिन्द्रितः।** अ 6 श्लो 2 ।"
किन्तु कालक्रम से इस विशिष्ट श्राद्ध को लोग भूल गये। यदि कहीं सुना भी जाता है तो केवल दुर्मरण के प्रायश्चित् स्वरूप। यही जनता में दृढ़ धारणा वन्धी है जो नितान्त भ्रमपूर्ण है। शास्त्रों में तो मोक्ष या भगवत्प्राप्ति की कामना से भी इस श्राद्ध को करने का विधान है। विशेषतः सन्यासियों या विरक्त महात्माओं के लिए तो अनिवार्य रूप से यही श्राद्ध करने का विधान पाया जाता है। पार्वण के अतिरिक्त शेष श्राद्ध की तो उन्हें आवश्यकता ही नहीं होती। क्योंकि वे तो जीवन में ही इस माया जाल को छोड़ देते हैं। निर्णयसिन्धुकार कहते हैं कि

शौनकोऽहं प्रवक्ष्यामि नारायणवलिं परम् । चाण्डालादुदकात्सर्पात् ब्राह्मणाद्वैद्युतादपि ।।
दंष्ट्रिभ्यश्च पशुभ्यश्च रज्जु शस्त्र विषाश्मभिः। देशान्तर मृतानाञ्च कनिष्ठानां तथैव च ।।
यतीनां योगिनां पुंसामन्येषां मोक्षकांक्षिणाम्। पुण्याघक्षयार्थाय द्वादशेऽहनि तु कारयेत्।।

यही नहीं छागल ऋषि ने तो जीवन काल में भी यह श्राद्ध करने का विधान किया है।

नारायणवलि कार्यो लोक गर्हाभयान्नरः ।तथा तेषां भवेच्छौचं नान्यथेत्यव्रवीद्यमः।।

अतः यह प्रश्न ही नहीं रह जाता कि हैजा सर्प विष फांसी इत्यादि के द्वारा मरने वालों के लिए ही यह श्राद्ध किया जाना चाहिए, जैसी भ्रान्त धारणा लोगों में वैठी है। वल्कि प्राणिमात्र के कल्याणार्थ इसे करना अनिवार्य है।
नारायण वलि श्राद्ध कव किया जाय इसमें भी लोगों में भ्रान्त धारणा वैठी है। प्रायः हठ पूर्वक लोग कहते हुए पाये जाते हैं कि एकादशाह को ही और महैकोदिष्ट श्राद्ध से पूर्व ही इसे करना चाहिए। किन्तु यहाँ पर निर्णय सिन्धुकार ने स्पष्ट कहा है '**द्वादशेऽह्णिकारयेत**' तो संदेह का स्थान ही नहीं रह जाता है। हाँ, विचारणीय विषय यह है कि वास्तव में इसे कव करना चाहिए ? यदि प्रायश्चित्त मात्र के उद्देश्य से करना हो तो एकादशाह को भी कर सकते हैं। किन्तु एकादशाह के लिए कोई सवल प्रमाण नहीं मिलता जैसा कि द्वादशाह के लिए 'निर्णय सिन्धुकार' 'वोधायन स्मृति' शालावती तथा शौनक के वचन प्रमाण स्वरूप मिलते हैं।
अव मुक्ति की कामना की वात रह जाती है।अतः द्वादशाह को ही करना चाहिए। शेष श्राद्धों को समाप्त करे जिससे प्रेतात्मा को मुक्ति हो। यदि जीवितावस्था में ही करना हो तो द्वादशी तिथि को करे। किसी तीर्थादि में करना हो तो सदैव किया जा सकता है। इसके सद् असद् का विद्वान लोग आग्रह छोड़कर प्राणिमात्र के कल्याण के लिए यह श्राद्ध करने का प्रचार करें एवं मानव जीवन को सार्थक वनावें।

मंगलाचरण

अखिल भुवन जन्म स्थेम भङ्गादि लीले विनत विविध भूत व्रात रक्षैक दीक्षे।
श्रुति शिरसि विदीप्ते ब्रह्मणि श्रीनिवासे भवतु मम परस्मिन शेमुषी भक्तिरूपा ।।

ब्रह्ममेध का मूल श्लोक (वृद्ध हारीत संहिता अध्याय 6)

पिता वा यदि वा माता भ्राता वाऽन्ये सुहृज्जनाः। यदि पञ्चत्व मापन्नाः कथं कुर्याद्विजोत्तम ।।1
कनिष्ठ वर्ज मेवात्र वपनं मुनिभिः स्मृतम्। स्नात्वाचम्य विधानेन कारयेत्पूजनं हरेः।।2

रंगवल्लयादि भिस्तत्र कुयात्सर्वत्र मंगलम्। रोदनं वर्जयित्वैव गोमेयन शुचिस्थलम्। ।3
विलिप्य मंडले तत्र धान्य स्योपर्युलूखलम्। कलशांस्तु चतुर्दिक्षु तण्डुलोपरि निक्षिपेत् । ।4
हिरण्य पञ्च गव्यानि पंच त्वक् पल्लवान् न्यसेत्। वाससा तन्तुना वापि वेष्टयेत्रि प्रदक्षिणम्। ।5
उलूखले वासुदेवं कलशेषु क्रमेणच। प्रद्युम्नमनिरूद्धञ्च संकर्षणमधोक्षजम्। ।6
संपूज्य गन्धपुष्पाद्यैर्भक्त्या भक्ष्यं निवदयेत्। अभ्यर्च्य मुसलं पुष्पैर्गायत्र्या प्रणवेण च। ।7
हरिद्रान वैहन्यात्तु परोमात्रेति वैजपन्। भगवन्मन्दिरे विष्णुं हरिद्राद्यै ः प्रपूजयेत् । ।8
पितुः शरीरं विधिवत् स्नापयेत् कलशोदकै ः। तिलैश्च पञ्चगव्यैश्च गायत्र्या वैष्णवेन च । ।9
उदवत्यै सर्वं क्रमेणेति स्नापयेत् पितरंसुतः। नारायणानुवाकेन चैवं स्नाप्य ततः पितुः। ।10
धौतवस्त्रं च सम्वेष्टय भूषणैर्भूषयेत्ततः। गंधमाल्यैरलंकृत्य शुचौ देशे कुशोत्तरे। ।11
तिलोपरि निधायैनं वस्त्रं हित्वाऽन्यतः सुतः। धारयेत उत्तरीयेद्वे यावत्कर्म समाप्यते। ।12
हुत्वैवोपासनं तस्य आद्रयज्ञीय काष्ठकैः। शिविकां कारयित्वाथ वस्त्रमाल्यादिभिः शुभाम्। ।13
तस्मिन्निवेश्य तं प्रेतं वाहकान् वरयेत्ततः। स्ववर्ण वैष्णवानेव पूजयेत्स्वर्ण दक्षिणैः। ।14
वहेयुस्तेऽपि भक्त्या तं पठन् विष्णुस्तवान् मुदा। हरिद्रा लाज पुष्पाणि विकरन् वैष्णवाः मुदाः। ।15
वादित्र नृत्य गीताद्यैः ब्रजेयुः कीर्तयन्हरिम्। हुताग्निमग्रतः कृत्वा गच्छेयुस्तस्य वान्धवाः। ।16
वाहकानामलाभे तु शकटे गो वृषान्विते। निवेश्य शिविका रम्यां ब्रजेयुर्नगराद् वहिः। ।17
दक्षिणेन मृतं शूद्रं पुरद्वारेणनिर्हरेत्। पश्चिमोत्तर पूर्वेषु यथा संख्यं द्विजातयः। ।18
प्राग्द्वारं सर्व वर्णानां न निषिद्धं कदाचन। गत्वा शुभतरं देशं रम्यं शुभ जलान्वितम्। ।19
यज्ञ वृक्ष समाकीर्णममेध्यादि विवर्जितम्। खातयेत्तत्र कुण्डन्तु निम्न हस्तत्रयं तदा। ।20
द्वाभ्यां त्रिभिर्वा विस्तारं चतुरायतमेव च । ततः संमार्जनं कृत्वा गोमयान्वित वारिणा। ।21
सम्प्रोक्ष्य यज्ञियैः काष्ठैश्चितिं कुर्याद्यथा विधिः। आस्तीर्य दक्षिणाग्रमेवैणाजिनं अनुत्तमम्। ।22
तस्मिन्नास्तीर्य दर्भात्वै विकीर्य च तिलांस्तथा। तस्मिन्निवेश्य तं देवं घृताक्तं नव वस्त्रकम्। ।23
ईषद्धौतं नवं श्वेतं पूर्व यन्न च धारितम्। अहतं तद्विजानीयाद् दैवे पित्र्ये च कर्मणि । ।24
परिषिच्य चितिं पश्चादापोऽस्मानितीत्यृचा। परिस्तीर्य शुभैर्दभैरपसव्येन सव्यतः। ।25
उरस्यग्निं निधायाथ पात्रासादनमाचरेत्। प्रोक्षणं चमसाज्येन चरूमिध्म सुवौ तथा। ।26
आसाद्योक्त विधानेन इध्माधानान्तमाचरेत्। स्वगृह्योक्त विधानेन हुत्वा सर्वमशेषतः। ।27
पश्चादाज्ययुतं द्रव्यं जुहूयात् उपवीतवान्। सोमानमित्योदनेन प्रत्यृचं ततः आज्यत। ।28
तं महेन्द्रेति सूक्तेन हुत्वा प्रत्यृचमेव च। एषइत्यनुवाकाभ्यां पृषदाज्यं यजेत्ततः। ।29
सर्वैश्च वैष्णवैः मन्त्रैः पृथगष्टोत्तरंशतम्। तिलैश्च जुहयात्पश्चात् अष्टाविंशति मेव वा। ।30
एकैकामाहुतिं पश्चाद्वैकुण्ठ पार्षदं यजेत्। ब्रह्ममेधः इति प्रोक्तः मुनिभिः ब्रह्मतत्परैः। ।31
महाभागवतानाञ्च कर्तव्यमिदमुत्तमम्। केशवार्पित सर्वाङ्गं शशिभं मंगलाद्वयम्। ।32
न वृथा दाहयेद्विद्वान् ब्रह्ममेध विधिं विना। परंभागवतेनापि कर्तव्यं हि द्विजन्मनः। ।33
द्रव्यलाभेऽपि होतव्यं यज्ञियैश्च प्रसूतकैः। शूद्रस्यापि विशिष्टस्य परमैकान्तिनस्तथा। ।34
स्वाहाकारञ्च वेदं च हित्वा पुष्पैर्यजेच्छुभैः। तूष्णीमद्भिः परिषिच्य परिस्तीर्य कुशैस्तिलैः। ।35
नामभिः केशवाद्यैश्च तथा संकर्षणादिभिः। मत्स्य कूर्मादिभिश्चैव वेदार्थोक्त प्रबन्धकैः। ।36

इति ब्रह्ममेध संस्कारस्य मूल श्लोकाः (वृद्ध हारीत संहिता अध्याय 6)

ब्रह्ममेध संस्कार की सामग्री

1। नवीन वस्त्र और उपवीत। 2। चौका वन्दनवार का सामान।
3। चन्दन पुष्प दीप नैवेद्य पान सुपारी। 4। सूत हल्दी।
5। आंवला पञ्चगव्य पञ्चामृत और तिल। 6। ऊखल मूसल और हल्दी।
7।चार कलश पूर्णपात्र पञ्चपल्लव और पञ्चत्वक्। 8।कुश यज्ञीय काष्ठ तुलसी घी हविष या भात।

ब्रह्ममेध का क्रम

1। दाहकर्ता को क्षौर करन और अहत वस्त्र उपवीत धारन। 2।भगवान के समीप चौका रंगवल्ली वन्दवार करना।
3।ऊखल के सहित कलश स्थापन। 4।कलशों के ऊपर देवताओं का पूजन।
5।हल्दी कूटना और भगवत पूजन। 6। सूतक का स्नान अलंकार और हवन।
7। सूतक को श्मशान ले जाना। 8। चिता भूमि शोधन और चिता निर्माण।
9।चिता के ऊपर मृतक को रखना और अग्नि देकर हवन करना।

नारायण वलि की सामग्री

1। मलयगिरि चन्दन एक छटांक। 2। यथा प्राप्त जड़ सहित कुश ।
3। श्वेत एवं सुगन्धित यथा साथ पुष्प। 4। देवदारू पांच सेर।
5। दीप पचास। 6। कपास एक छटांक।
7। हल्दी चूर्ण एक छटांक। 8। चावल चूर्ण एक पाव।
9। पूगीफल एक पाव। 10।पान पचास पत्ता।
11। कर्पूर एक भर। 12। तुलसीदल यथासाध्य।
13। अगरवत्ती एक वेष्टन। 14। कलश वड़ा छः मिट्टी का या ताम्र का।
15। ढक्कन पांच। 16। नारियल पांच।
17। शूत। 18। पंचमेवा सवा सेर।
19। तिल सवा सेर। 20। मधु एक छटांक।
21। गुड़ एक सेर । 22। गोघृत पांच सेर।
23। हवनार्थ चर्तुभागं यवा प्रोक्ताः द्विभागाज्यमेव च।त्रिभागं कृष्ण तिलं भागमेकञ्च तण्डुलम् तदर्थ शर्करा प्रोक्ता तदर्थ गुग्गुलादयः।
24। एक नयी छोटी चौकी भगवान को रखने के लिए। 25। पञ्चपात्र चांदी या ताम्र का।
26। आसनी कम से कम पांच। 27। गीता या विष्णु सहस्रनाम की पुस्तक।
28। तुलसी की माला। 29।आचार्य या अन्यान्य कार्यकर्ताओं को वरण।
30। कलश आच्छादन तथा अन्यान्य कार्यों के लिए पांच गज कपड़ा।
31। देवदार की वनी हुई हवनार्थ प्रोक्षणी प्रणीता श्रुवा ।
32। हविष के लिए गौ का दश सेर दूध । 33। अरवा चावल पांच सेर।
34। स्नानार्थ आंवला। 35। धान।

नारायण वलि का क्रम

1। ब्राह्मणों का निमन्त्रण। 2। विष्णु सूक्त का पाठ। 3। कर्म पात्र का निर्माण। 4। मुख्य संकल्प। 5। आचार्य वरण। 6। वैकुण्ठ तर्पण।7। शालिग्राम पूजन। 8। कलश स्थापन और इन्हीं सवों के ऊपर चतुर्व्यूहों के सहित नारायण पूजन।9।कुश कण्डिका । 10। अग्नि स्थापन और पूजन।11। ब्रह्मा वरण अग्नि संस्कार और हवन। 12। द्वादश नारायण का आवाहन और पूजन अवनेजन पिण्ड पूजन अक्षय्योदक। 13। उपरोक्त रीति से ही नित्य मुक्त और सर्ववैष्णवों का पिण्डादि दान।

सूक्त संग्रह प्रकरण

अथ नारायणानुवाकः

ॐ सहस्र शीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्व शम्भुवम्।विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं प्रभुम्। ।1
विश्वतः परमं नित्यं विश्वं नारायणं हरिम्।विश्वमेवेदं पुरूषस्तद्विश्वमुपजीवति। ।2
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं शाश्वतं शिवम्च्युतम्।नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्। ।3
नारायणः परंब्रह्म तत्वं नारायणः परः।नारायणः परो ज्यातिरात्मा नारायणः परः। ।4
यच्च किञ्चिज्जगत्यस्मिन् दृश्यते श्रूयतेऽपिवा।अन्तर्वहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः। ।5
अनन्तमव्ययं कविं समुद्रेऽन्तं विश्व शम्भुवम्।पद्मकोश प्रतीकाशं हृदयञ्चाप्यधो मुखम्। ।6
अधो निष्ट्या वित्स्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति।हृदयं तद्विजानीयाद्विश्वस्यायतनं महत्। ।7
सन्ततं शिराभिस्तु लम्बत्या कोश सन्निभम्।तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठतम्। ।8
तस्य मध्ये महानग्निविश्वार्चि विश्वतो मुखः।सोऽग्र भुग्विभजन् तिष्ठिन्नाहारमजरः कविः। ।9
सन्तापयति स्वं देहमापादतल मस्तकम्।तस्ये मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थिता। ।10
नील तोयद मध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा।नीवार शूक यत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा। ।11
तस्याः शिखायाः मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः ।स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट्। ।
ऋतं सत्यं परब्रह्म पुरूषं कृष्ण पिङ्गलम्।उर्ध्वरितं विरूपाक्षं विश्व रूपाय वै नमः। ।13
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धी महि।तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। ।14

अथ विष्णु सूक्त

ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रेवाचं यः पार्थिवानि विममेरजा ँ सि।
योऽअस्कभा यदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रे धोरुगायो विष्णवे त्वा। । 1
ॐ विष्णोरराट मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थोविष्णोः स्यूरसि। विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। ।2
तदस्य प्रियमपि पाथो अपश्याम् नरो यत्र देवयवो मदन्ति।उरुक्रमस्य स हि वन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः। ।3
प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरोगरिष्ठाः। यस्योरूषु त्रिषु विचक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। ।4
परोमात्रया तनुवा वृधान न ते महिमत्वमन्वश्नुवन्ति। उभे ते विद्म रजसि पृथिव्या विष्णोर्देवत्वं परमस्य वित्से। ।5
विचक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णु मनुषे दशस्यन्। ध्रुवासोऽस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार । ।6
त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां विचक्रमे शतर्चसं महित्वा। प्रविष्णुरस्तु तव सस्त वीर्यान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम। ।7

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे पृथिव्याः सप्तधामभिः ।।8
इडं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पा सुरे।।9
त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । ततो धर्माणि धारयन्।।10
विष्णोः कर्माणि पश्यत् यतो व्रतानि पस्पसे । इन्द्रस्य युज्यः सखा।।11
तद्विष्णोर्परं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।।12
तद्विविप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समन्धिते। विष्णोर्यत्परं पदम्।।13

पुरुष सूक्त

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्। स भूमि ँ सर्वतस्पृत्वात्य तिष्ठदशाङ्गुलम्।।1
पुरुष एवेद ँ सर्वं यदभूतं यच्च भाव्यम्।उता मृतत्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति।।2
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः।पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रमित् साशनानशने अभिः।।4
ततोविराडजायत विराजो अधि पूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः ।।5
तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः संभृतं पृषादाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानाराण्या ग्राम्याश्च ये।।6
तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः ऋचः सामानि यज्ञिरे। छन्दा ँ सि यज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।7
तस्मादश्वा अजायन्त येके चोभयादतः। गावोह यज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।8
तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन्पुरूषंज्जातमग्रतः।तेन देवा अयजन्त साध्या ऋष्यश्च ये।।9
यत्पुरूषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादा उच्यते।।10

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः। उरू तदस्य यद्वैश्य पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।11
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।श्रोत्राद्वायुश्च प्राणाश्च मुखादग्निरजायत।।12
नाभ्यां आसीदन्त रिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।पदाभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।13
यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।14
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तत्वाना अवध्नं पुरुषं पशुम्।।15
यज्ञेन यज्ञमयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्तिदेवाः।।16

सोम सूक्त

ॐ त्वं सोम प्रचिकितो मनीषात्वं रजिष्ठ मनुनेषि पन्थाम्।तव प्रणीती पितरो न इन्द्रो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः।।1
त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः। त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युमनेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः।।2
राज्ञानते वरूणस्य व्रतानि वृहद् गभीरन्तव सोमधाम।शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो द्राक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम।।3
याते धामनि दिविया पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु। तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेडन्नाजन्त्सोम प्रतिहव्या गृभाय।।4
त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि क्रतु।।5
त्वं च सोम नो वसो जीवातुं नमरामहे।प्रिय स्तोत्रो वनस्पतिः।।6
त्वं सोममहे भगं त्वं यून ऋतायते। दक्षं दधामि जीवसे।।7
त्वन्नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नधायतः।नरिष्ये त्वावतः सखा।।8
सोम यास्तेमयो भुव उतयः सन्ति दाशुषे। ताभिर्नोविताभव ।।9
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि। सोम त्वं नो वृधे भव।।10

अथ इन्द्र सूक्तम्

यो जात एव प्रथमो मनास्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्ण्स्य मह्ना सजना स इन्द्रः।।1
यः पृथिवीं व्यधमानामद्दं हद्यः।पर्वतान् प्रकुपितां अरभ्णात्।
यो अंतरिक्षं विम मे वरीयो योद्यामस्तभ्नात सजना स इन्द्रः।।2
यो हत्वा हिमरिणाप्सप्त सिन्धुन्योगा उदाज दशधा बलस्य।
यो अस्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक समत्सु सजना स इन्द्रः।।3
येने मा विश्वाच्यवना कृतानि योदा संवरणमधरं गुहाकः।
श्वघ्नी वयो जिगीवाँ ल्लक्षमाद दुर्यः पुष्टानि सजना स इन्द्रः।।4
यस्मा पृच्छन्ति कुहसेति घोर युते माहुर्नेष्मे अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टिविज हवामि नास्ति श्रद्धस्मै धत्त स इन्द्रः।।5

विशेष द्रष्टव्य ः सामग्रियों के अभाव में केवल घी तिल या पुष्प से भी काम चल सकता है। वैष्णवी क्रियाओं में सभी मन्त्रों के अभाव में मूल मन्त्र तथा सभी औषधियों के अभाव में हल्दी और कलश में दी जानेवाली सभी वस्तुओं के अवाव में तुलसी से भी काम चलाया जा सकता है। अनुपवीत व्यक्तियों को वैदिक मन्त्रों का उच्चारण मना है। इस सूक्त संग्रह प्रकरण में बह्ममेध तथा नारायण वलि में आने वाले सभी सूक्त तथा अनुवाक् एवं मन्त्रांशों का संग्रह कर दिया गया है।आगे आवश्यकतानुकूल केवल "सू सं प्र" इतना ही लिखा रहेगा।

विष्णु गायत्री "ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्" ।
सभी मन्त्रों के अभाव में मूल मन्त्र "ॐ णमो नारायणाय" ।
आपोऽस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेननो घृतष्वः पुनन्तु (सेचनार्थ) ।

प्रोक्षण मन्त्रः

1। ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः। 2। ॐ तान दधातन। 3। ॐ महेरणाय चक्षसे। 4। ॐ योवः शिव तमो रस।
5। ॐ तस्य भाजयते हनः। 6। ॐ उशतीरव मातरः। 7। ॐ तस्मा अरंग मामव। 8। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ।
9।ॐ आपो जनयथा च नः।

विष्णु मन्त्र "ॐ नमो विष्णवे।"

वैकुण्ठ पारिषदों के नाम

1। अनन्त। 2।गरुड़। 3।विष्वकसेन। 4।चण्ड। 5।प्रचण्ड। 6।कुमुद। 7।कुमुदाक्ष। 8।जय। 9।विजय।
10।सुमुख। 11।जयन्त। 12।धातृ। 13।विधातृ। 14।सर्वजित। 15।प्रियंकर। 16। ज्ञान निकेत। 17।सुप्रतिष्ठित।
18। भद्र। 19।सुभद्र। 20।नन्द। 21।सुनन्द।

अथ ब्रह्ममेध संस्कार

श्रीवैष्णवों के किसी सम्वन्धी (माता पिता या अन्य गुरुजनार्दि) की मृत्यु हो जाने पर मृतक का दाह संस्कार कर्त्ता (पुत्र

या शिष्यादि) सर्व प्रथम रोदन शोकादि रहित स्वयं कनिष्ठ स्थान को छोड (नख कक्ष) क्षौर कर्म कराकर स्नान अहत वस्त्र (नवीन युग्म) उपवीत धारण कर तिलक आचमनादि द्वारा पवित्र हो भगवान के समीप (मन्दिर या अलग ही जहाँ शालिग्राम भगवान हो) चौका वन्दनवारादि साधनों के द्वारा अलंकृत कर भगवान की पूजा करे। यह पूजाविधि इसी पुस्तक के नारायण वलि श्राद्ध प्रकरण में सविस्तर दी गयी है। इस पूजा के प्रसंग में कलशस्थापन भी होता है, यह विधि भी वहीं है। जहाँ भगवान की पूजा होगी उस स्थान को गोवर से लीपकर मण्डल के मध्य में धान के ऊपर ऊखल रखे और उसके चारों ओर चार कलश क्रमशः उत्तर पूर्वादि दिशाओं में कलशस्थापन विधि से स्थापित कर उन सवों में सोना पञ्चगव्य पञ्चपल्लव और इन्हीं पञ्चगव्य वाले वृक्षों की त्वचा भी डाले। कलश सूत या वस्त्र से वेष्टित होना चाहिये। कलश स्थापन के उपरान्त ऊखल के ऊपर वासुदेव तथा अन्यान्य कलशाओं के ऊपर पूर्वोक्त क्रम से ही प्रद्युम्न अनिरूद्ध संकर्षण तथा अथोक्षज भगवान का आवाहन एवं गन्ध पुष्प नैवादि से नाम मन्त्रों के द्वारा पूजन करे। विष्णु गायत्री से मूसल की पूजा कर उपरोक्त ऊखल में "**परोमात्रया .....**" विष्णुसूक्त के पांचवें मन्त्र से थोड़ी हल्दी पूजित मूसल से कूटे और शालिग्राम भगवान या मन्दिरस्थ प्रतिमा की पूजा इसी हल्दी से करे।

विशेष द्रष्टव्य ः सूतक में नाल छेदन के पश्चात् और मृत्यु होनेपर दाह संस्कार के पश्चात् अशौच लगता है। अतः मंरणोपरान्त उपरोक्त के प्रसंग में किसी तरह का सन्देह नहीं करना चाहिये। साथ ही ऐसे अवसर पर रोदन भी किसी को नहीं करना चाहिये।

पूजन के पश्चात् मृतक को क्षौर करवाकर इन्हीं कलशों के जल से पिसा हुआ तिल और आंवला एवं पञ्चगव्य का उवटन लगाकर नहलावे। भगवान के स्नान कराये हुए पञ्चामृत से भी मृतक को स्नान करावे। स्नान काल में विष्णु गायत्री एवं नारायणानुवाक का पाठ करना चाहिए। स्नानोत्तर मृतक को नवीन वस्त्र उपवीत तिलक तुलसी की माला एवं पुष्पादि से अलंकृत कर पवित्र कुशासन के ऊपर वस्त्र विछाकर एव तिल छींटकर उसको रखे और उसके समीप ही कम से कम **28** वार मूल मंत्र के द्वारा अग्नि में गोघृत का हवन करे। यही अग्नि दाहार्थ श्मशान में जाती है। मृतक को श्मशान में ले जाने के लिए शिविका (अरथी) यज्ञीय काष्ठों का वना उसे पुष्पमाला से सुसज्जित कर शव वहनार्थ सवर्णीय या स्ववान्धवों को सोना या अभाव में कुछ द्रव्य देकर वरण करने की विधि से वरण करे। और उन वाहकों के साथ श्माशान मार्ग में यव एवं लाजा एवं हरिद्रादकों को छिड़कते हुए प्रसन्न चित्त से बाजे गाजे के साथ विष्णु स्तोत्रादि का पाठ करते हुए आगे (जिसमें पूर्व हवन हुआ था वह) अग्नि और पीछे से मृतक को श्मशान ले जावे। यदि ग्राम रक्षार्थ ग्राम के चतुर्दिक प्रकोष्ठ (घेरा) हो तो उसके पूर्व द्वार से ब्राह्मण उत्तर के द्वार से क्षत्रिय पश्चिम के द्वार से वैश्य और दक्षिण के द्वार से शूद्र मृतक को श्मशान ले जाये। पूर्व का द्वार सवों के लिए ग्राह्य है। मृतक दाहार्थ चिता निर्माण से पूर्व उस स्थान का संशोधन कर लेना चाहिए। प्रथम उस स्थान को आयताकार उत्तर से दक्षिण तीन या चार हाथ लम्वा और दो हाथ चौड़ा तथा जितनी गहराई तक (प्रायः वारह अंगुल भूमि) कर्षणादि व्यवहार में आती है उतनी गहराई तक खोदकर वाहर फेंक दे और गर्त को गोवर से मार्जन मन्त्र से मार्जन कर यज्ञीय काष्ठों सूखी तुलसी की लकड़ी, गूलर, पीपल, पलाश, चन्दन, देवदारू द्वारा चिता वनावे। तुलसी की लकड़ी अवश्य हो। उसकी महत्ता यों पायी जाती है -

शरीरं दह्यते येषां तुलसी काष्ठ वह्निना। न तेषां पुनरावृत्तिः विष्णुलोकात्कथञ्चन।।
यद्येकं तुलसी काष्ठं मध्ये काष्ठस्य तस्य हि। दाह काले भवेन्मुक्तिः कोटि पापयुतस्य च।।

पद्मपुराण उत्तर खंड अ **23** ।श्लो **3** एवं **7**।

चिता की रचना कर लेने पर "**आपोहिष्ठा**" सू सं प्र के प्रोक्षण मंत्रों के द्वारा प्रोक्षण कर ऊपर से कुछ कुश और तिल

डालकर घी लगाया हुआ मृत शरीर को चिता के ऊपर उत्तर शिर और उतान ही रख "आपोऽस्मान" के ऋचा द्वारा जल छिड़क कर ऊपर कुश एवं काष्ठादि से आच्छादित कर घर से लायी हुई अग्नि को मृतक के हृदय स्थान पर रखे और यथाविधि तत्कालीन हवन सामग्रियों को यथाक्रम रख सवों को प्रोक्षण करे समिधाधान 3 या 5 या 7 सूखी यज्ञीय काष्ठ टुकड़ियों को घी में डुवा चुपचाप अग्नि में देकर अग्नि को प्रदीप्त करे। पश्चात् स्वगृह्य सूत्र के अनुसार यथा साध्य हवन क्रियाओं को उसी चिता की अग्नि में समाप्त कर पश्चात् सोम सूक्त के प्रत्येक ऋचाओं द्वारा घी मिश्रित हविष एवं इन्द्र सूक्त द्वारा केवल तथा विष्णु मंत्र के द्वारा केवल तिल से और अन्त में सभी वैकुण्ठ पारिषदों को नाम मंत्र द्वारा केवल घी से हवन कर इस क्रिया को समाप्त करे।

विशेष द्रष्टव्य : 1। श्मशान भूमि यज्ञिय वृक्षों से युक्त एवं पवित्र जलाशयादि के समीप होनी चाहिए। चिता स्थान की गहराई के सम्बन्ध में शास्त्रों में तीन हाथ तक प्रमाण मिलता है किन्तु यह अव्यवहारिक है अतः उपेक्ष्य है। चिता के ऊपर मृगचर्म भी विछाने का प्रसंग मिलता है किन्तु अव्यवहारिक है।

2। यदि उपरोक्त संस्कार में सामग्री का अभाव हो तो केवल यज्ञिय पुष्पों से सभी काम करे। शूद्र को वृत्समेध संस्कार या श्राद्ध में प्रणव स्वाहा स्वधा और वैदिक मन्त्रों का उच्चारण नहीं करे ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

नारायण वलि का मूल श्लोक

निर्वर्त्य विधिनाधर्मं सामान्येनावशेषतः। विशिष्टं परमं धर्मं नारायण वलिं ततः। ।1
प्रकुर्याद् वैष्णवैः सार्धं यथा शास्त्रमतन्द्रितः। निमंत्रयेत्तु पूर्वेदयुः ब्राह्मणान्वैष्णवान् शुभान्। ।2
चतुर्विंशति संख्याकान् महाभागवत्तोत्तमान्। केशवादिन् समुद्दिश्य चतुर्विंशति वैष्णवान्। ।3
रात्रौ निमन्त्रय सम्पूज्य तैः सार्धं विजितेन्द्रियः। प्रातरूत्थाय तैर्गत्वा नदीं पुण्य जलन्विताम् । ।4
धातृफलानुलिप्ताङ्गो निमज्य विमले जले। जपन्वै वैष्णवान्सूक्तान स्नानं कुर्वीत वै द्विजः। ।5
वैकुण्ठ तर्पणं कुर्यात् कुसुमैः सतिलाक्षतैः। गृहं गत्वार्चयेद्देवं सर्वावरण संयुतम्। ।6
सुगंधं पुष्पैर्विविधैर्गन्धधूपैश्च दीपकैः। नैवेद्यैर्भक्ष्यभोज्यैश्च फलैर्नीराजनैरपि। ।7
अर्चयित्वा विधानेन मूलमंत्रेण वैष्णवः। पुरतोऽग्निं प्रतिष्ठाप्य इध्माधानं समाचरेत्। ।8
चरूं सशर्कराज्यं तु जुहुयादवह्नि मण्डले। प्रत्यृचं वैष्णवैः सूक्तैः केशवाद्यैश्च नामभिः। ।9
हुत्वाथ वैष्णवैर्मन्त्रैः पृथगष्टोत्तरं शतम्। गवाज्येनैव जुहुयात् चतुर्भिवैष्णवोत्तमः। ।10
वैकुण्ठ पार्षदं हुत्वा होम शेष समापयेत्। अग्नेरूत्तर भागेन गोमयेनानुलिप्य च। ।11
आस्तीर्य दर्भान्प्राग्रान् चतुर्विंशति संख्यया। उदक् प्रार्वाणकेनैव केशवादि क्रमेण तु । ।12
अभ्यर्च्य गन्धपुष्पादर्यस्तत्तन्मन्त्रैः पृथक् पृथक्। मध्वाज्यतिलमिश्रेण चरूणा पायसेन वा। ।13
कुशेषु तेषु दद्यात्तु पिण्डन्तीर्थं विधानतः स्वाहाकारेण मनसा केशवादीन क्रमेण वै। ।14
दत्वा पिण्डान्समभ्यर्च्य गन्धपुष्पाक्षतोदकैः। नित्येभ्यश्चैव मुक्तेभ्यो वैष्णवेभ्यस्तथैव च। ।15
दधात् पिण्डत्रयं चैव तेषां दक्षिणतः क्रमात्। विष्णोर्नुकेन सूक्तेन उपस्थानं जपं तथा। ।16
प्रदक्षिणं नमस्कारं कृत्वा भक्त्याथ वैष्णवः। पिण्डान्स्तु सलिलेदत्वा स्नात्वा सम्पूज्य केशवम् ।17
ब्राह्मेणान्भोजयेत्पश्चात्पादप्रच्छानादिभिः। अर्घ्याद्यैर्गन्ध पुष्पाद्यैर्बाससोऽलंकारभूषणैः। ।18
केशवादिन्समुद्दिश्य नित्यान्मुक्तांश्च वैष्णवान्। सम्पूज्य विधिवत् भक्त्या महाभागवतोत्तमान्। ।19
पायसं सगुड़ं साज्यं शुद्धान्नं पानकैः फलैः। सम्भोज्य विप्रानाचान्तान् प्रणिपत्य विसर्जयेत्। ।20
हविष्यञ्च सकृद् भुक्त्वा भूमौदद्यात् कुशोत्तरे। अयं नारायण वलिर्मुनिभिः सम्प्रकीर्तितः। ।21

। । इति वृद्ध हारीत संहितायां पष्ठाध्याये नारायण वलि विधिः समाप्तः। ।

नारायण वलि का सविस्तर कृत्य

श्राद्धकर्त्ता श्राद्ध से एकदिन पूर्व ही संध्या समय चौवीस ब्राह्मणों को निमन्त्रण करने के लिए स्वयं उनके घर जाये और हाथ में सुपारी और अक्षत लेकर स्वयं पूर्व मुख वैठे और वैष्णव ब्राह्मणों को पश्चिमाभिमुख वैठाकर इस तरह संकल्प करे "ॐ श्वोऽमुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य नारायण वलि श्राद्धे भवन्तं देवं ब्राह्मणमेभिर्द्रव्यादिभिरहमामंत्रये" ऐसा वोलकर ब्राह्मण के हाथ में सुपारी आदि दे दे। ब्राह्मण उसे लेकर कहे "ॐ तथास्तु।" और उसके पश्चात् ब्राह्मण को यजमान यह नियम सुनावे "अक्रोधनैः शौच परैः सततं ब्रह्मचारिभिः । भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्ध कारिणा।" अर्थात् आप और मुझे दोनों को क्रोधादिरहित पवित्रता से और ब्रह्मचर्य नियम पूर्वक रहना चाहिए। पुनः दूसरे दिन ब्राह्मणों के घर आ जाने पर उन्हें साष्टांग प्रणाम पूर्वक "ॐ ब्राह्मणाय नमः।" इस मन्त्र से पूजन करे और क्षौर करवा कर आंवला लगा कर उनके साथ स्वयं भी स्नान करे और नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर विष्णु सूक्त का पाठ करे। इसके पश्चात् कर्मपात्र का सम्पादन करे।

कर्मपात्र निर्माण

पूर्वाग्र कुशों के ऊपर पवित्र लोटा या कोई दूसरा ही पवित्र पात्र रखकर उसमें "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवस्तु नः" से जल, "ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो" से कुश, "ॐ यवोऽसि यवया अस्मद् द्वेषो यवया रातिः" से जौ, "श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्नया वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्व लोकम्म इषाण" से तुलसी दल, "ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्" से चन्दन और "ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गो सवो देव निर्मितः । प्रत्नमद्भिः पृक्तः प्रेतमिमं लोकं प्रिणाहि नः" से तिल डालकर, "ॐ गंगे च यमुनेचैव गोदावरी सरस्वती । विरजे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू" पढ़कर सभी तीर्थों का आवाहन करके, "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः" पढ़कर स्वयं तथा अन्य सामग्रियों को भी पवित्र कर ले।

कर्मापवर्ग दीप (घृत का)

यह दीप कर्म के प्रारम्भ से अन्त तक जलते रहता है। "ॐ अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निर्वर्च्चो ज्यातिर्वर्च्चः स्वाहा, सूर्योवर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा, ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।" इस मन्त्र से घी का दीप जलाकर कर्मस्थल में रख दे और पर उस ध्यान रहे कि वुझने न पावे।

मुख्य संकल्प

हाथ में अक्षत तिल जल कुश सुपारी आदि लेकर संकल्प करे "ॐ अद्येहामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य भगवत् लोकप्राप्त्यर्थं नारायण वलि श्राद्ध अहं करिष्ये।"

वि द्रष्टव्य :

1। श्राद्धकाल में जापक गण मूल मन्त्र का जप करें और पाठक गीता विष्णुसहस्रनाम भागवत या प्रवन्ध का पाठ करते रहेंगे। यह काम श्राद्ध समाप्ति पर्यन्त चलता रहेगा। 2। नारायण वलि की सभी क्रियायें सव्य (पूर्वाभिमुख) हो कर ही की जाती है। अतः अपसव्य के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। कर्म करते समय कुश की पवित्र पैंती अंगुलियों में लगा ले।

वैकुण्ठ तर्पण

पुनः सव्य होकर तिल अक्षत तुलसी चन्दन पुष्प और तीन कुश लेकर पूर्वाभिमुख हो कोई ताम्रपात्र या पीतल पात्र या नवीन मृत्तिका पात्र में वैकुण्ठ तर्पण करे। तर्पण के समय उपरोक्त सभी वस्तुयें अञ्जली में सदैव रहेंगी। इस तर्पण में सभी नामों के आदि में "ॐ" और अन्त में "तृप्यताम्" लगा रहेगा। प्रत्येक नाम के साथ एक एक अञ्जलि दी जायेगी। **1**। ॐ केशवस्तृप्यताम्। **2**। ॐ नारायणस्तृप्यताम्। **3**। ॐ माधवस्तृप्यताम्। **4**। ॐ गोविन्दस्तृप्यताम् । **5**। ॐ विष्णुस्तृप्यताम् । **6**। ॐ मधुसूदनस्तृप्यताम्। **7**। ॐ त्रिविक्रस्तृप्यताम् । **8**। ॐ वामनस्तृप्यताम् । **9**। ॐ श्रीधरस्तृप्यताम्। **10**। ॐ हृषीकेशस्तृप्यताम्। **11**। ॐ पद्मानाभस्तृप्यताम्। **12**। ॐ दामोदरस्तृप्यताम्। **13**। ॐ नारायणस्तृप्यताम्। **14**। ॐ संकर्षणस्तृप्यताम्। **15**। ॐ प्रद्युम्नस्तृप्यताम्। **16**। ॐ अनिरुद्धस्तृप्यताम्। **17**। ॐ वासुदेवस्तृप्यताम्। **18**। ॐ अनन्तस्तृप्यताम्। **19**। ॐ घरुड़स्तृप्यताम्। **20**। ॐ विष्वकसेनस्तृप्यताम्। **21**। ॐ चण्डस्तृप्यताम्। **22**। ॐ प्रचण्डस्तृप्यताम्। **23**। ॐ कुमुदस्तृप्यताम्। **24**। ॐ कुमुदाक्षस्तृप्यताम्। **25**। ॐ जयस्तृप्यताम्। **26**। ॐ विजयस्तृप्यताम्। **27**। ॐ सुमुखस्तृप्यताम्। **28**। ॐ जयन्तस्तृप्यताम्। **29**। ॐ धातास्तृप्यताम्। **30**। ॐ विधातास्तृप्यताम्। **31**। ॐ सर्वजित्स्तृप्यताम्। **32**। ॐ प्रियंकरस्तृप्यताम्। **33**। ॐ ज्ञाननिकेतनस्तृप्यताम्। **34**। ॐ सुप्रतिष्ठितस्तृप्यताम्। **35**। ॐ भद्रस्तृप्यताम्। **36**। ॐ सुभद्रस्तृप्यताम्। **37**। ॐ नन्दस्तृप्यताम्। **38**। ॐ शुनन्दस्तृप्यताम्।

शालिग्राम पूजन

वैकुण्ठ तर्पण के पश्चात् विष्णु की प्रतिमा या शालिग्राम की पूजा पुरूष सूक्त के सभी मन्त्रों से प्रत्येक मन्त्र के अन्त में "सर्वमंगलविग्रहाय समस्त परिवाराय श्रीमते नारायणाय नमः" जोड़कर सभी उपचारों को अर्पण करता जाये। यहाँ प्रत्येक मन्त्र का प्रथमांश केवल लिखा है। यदि नारायण वलि श्राद्ध मन्दिर में होगा तो वहाँ की प्रतिमा की ही पूजा की जायेगी। भगवान की पूजा में सुगन्धित श्वेत पुष्प ही व्यवहार में लावे।

1। आवाहन - यद्यपि शालिग्राम की मूर्त्ति में आवाहन की आवश्यकता नहीं होती तथापि उन्हें यह मन्त्र पढ़कर आवाहन के वदले तुलसी अर्पण करे "ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्सभूमि ँसर्वस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। ॐसर्व मंगलविग्रहं समस्त परिवारं श्रीमन्नारायणमावाहयामि।"

2। आसन - "ॐ पुरुष एवेद ँसर्व .....यदेन्नातिरोहति। ॐ सर्वमंगलविग्रहाय समस्त परिवाराय श्रीमते नारायणाय इदमासनम्।" इस मन्त्र को पढ़कर शालिग्राम की मूर्त्ति के नीचे तुलसी रख दे।

3। पाद्य - "ॐ एतावानस्य.....। ॐ सर्वमंगल ..... इदं पाद्यम्।" इस मन्त्र से तुलसी चन्दन मिश्रित जल तीन वार भगवान को समर्पण करे।

4। अर्घ्य - "ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत .....। ॐ सर्वमंगल ..... एष अर्घ्यः।" इस मन्त्र से तुलसी चन्दन मिश्रित जल तीन वार भगवान को समर्पण करे।

5। आचमन - "ॐ ततो विराड जायत विराजो.....। ॐ सर्वमंगल ..... इदमाचमनीयम्।" इस मन्त्र से तीन वार आचमन करावे।

6। स्नान - "ॐ तस्माद्यज्ञात्.....। ॐ सर्वमंगल ..... इदं स्नानीयम्।" इस मन्त्र से स्नान करावे। स्नानार्थ पञ्चामृत हो तो और अच्छा। भगवान के व्यवहार में आनेवाली वस्तु तुलसी से युक्त रहे। जल विशेष सुगंधित वस्तु से सुगंधित रहे।

7। वस्त्र - "ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि .....। ॐ सर्वमंगल ..... इदं वस्त्रम्।" पढ़कर अहत वस्त्र या रेशमी वस्त्र दे।

8। उपवीत - "ॐ तस्मादश्वा अजायन्त .....। ॐ सर्वमंगल ..... इदं यज्ञोपवीतम्।"

9 | गन्ध - "ॐ तं यज्ञं वहिर्षि प्रौक्षन्......... | ॐ सर्वमंगल .... अयं गन्धः | " से चन्दन लगावे |
10 | पुष्प - "ॐ षत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा .... | ॐ सर्वमंगल .... इदं पुष्पम् | " से पुष्प चढ़ावे |
11 | धूप - "ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्......... | ॐ सर्वमंगल .... अयं धूपः | "
12 | दीप - "ॐ चन्द्रमा मनसोजात .... | ॐ सर्वमंगल .... अयं दीपः | "
13 | नैवेद्य - "ॐ नाभ्यां आसीदन्त रिक्ष .... | ॐ सर्वमंगल .... इदं नैवेद्यम् | "
14 | आचमन - "ॐ कपूरं वासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम्आचम्यन्तां जगन्नाथ मयादत्तं हि भक्तितः | ॐ सर्वमंगल .... आचमनम् | तीन वार आचमन करावे | "
15 | पान - "ॐ षत्पुरुषेण हविषा .... | "
16 | सुपारी - "ॐ सप्तास्यासन परिधयस्त्रि सप्त .... | ॐ सर्वमंगल .... इति पूगीफलम् | "
17 | नीराजन - "ॐ यज्ञेन यज्ञमजयन्त देवा .... | ॐ सर्वमंगल .... इति नीराजनम् | "
18 | पुष्पाञ्जलि - भगवान के द्वादश नामों के द्वारा तुलसी और पुष्प अर्पण करता जाये |

भगवान का द्वादश नाम- **1** | ॐ केशवाय नमः | **2** | ॐ नारायणाय नमः | **3** | ॐ माधवाय नमः | **4** | ॐ गोविन्दाय नमः | **5** | ॐ विष्णवे नमः | **6** | ॐ मधुसूदनाय नमः | **7** | ॐ त्रिविक्रमाय नमः | **8** | ॐ वामनाय नमः | **9** | ॐ श्रीधराय नमः | **10** | ॐ हृषीकेशाय नमः | **11** | ॐ पद्मनाभाय नमः | **12** | ॐ दामोदराय नमः |

कलशस्थापन

भगवत्पूजन के पश्चात्उन्हीं के आगे वालू या पीली मिट्टी का एक स्थण्डिल बनाकर उसके वीच और चारों कोनों पर चावल या हल्दी के चूर्ण से स्वस्तिक चिह्न वनावे और उन सवों पर क्रमशः मध्य, ईशान, अग्नि, नैऋत्य और वायु कोनों पर निम्नलिखित विधि से पांच कलश स्थापित करे |

1 | भूमि स्पर्श - "ॐ भूरसि भूमिरस्यदिति रसि विश्वधाया विश्वस्य धर्त्री | पृथिवीं द्द ँह पृथिवी महि ँसोः | " मन्त्र से स्वस्तिक चिह्न वाली भूमि को छूवे |
2 | सप्तधान्य स्थापन - "ॐ धान्यमसिधिनुहि देवान्प्राणयत्वो दानायत्वा व्यानात्या दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधां देवोवः सविता हिरण्य पाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोसि | " सप्तधान्य फैलावे |
3 | कलश स्थापन - "ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वाविशन्तिन्दवः पुनरुजानिवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधार | पयस्वतीपुनर्मा विश्ताद्रयि | " इस मंत्र से सप्तधान्य पर तिलकादि से अलंकृत कलश रखे |
4 | जल - "ॐ वरुणस्योत्तम्मनमसि वरुणस्यस्कम्भ सर्जनीस्थो वरुस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद | " से कलश में जल डाले |
5 | चंदन - "ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम् | ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् | "
6 | कुश - "ॐ पवित्रेणस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनान्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः |
7 | दुर्वा - "ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि | एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च |
8 | सर्वौषधि या हल्दी - "ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रि युगम्पुरा मनैनु वभ्रूणामह ँशतन्धामानि सप्त च |
9 | सप्तमृत्तिका या तुलसी की मिट्टी - "ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी | यच्छानः शर्म्म स प्रथाः |
10 | सुपारी - "ॐ या फलिनीर्य्याऽफला अपुष्पाया श्चपुष्पिणीः वृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वँ हसः |
11 | स्वर्ण - "ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् सदाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम |

12 | पञ्चपल्लव - "ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवोवसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पुरुषम्।

13 | वस्त्र - "ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातुवसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः।

14 | पूर्णपात्र - "ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो।

इसके पश्चात्पांचों कलशों को श्वेत वस्त्र से ढक दे और पुनः मध्य से आरम्भ कर स्थापित क्रम से ही नारायण संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध तथा वासुदेव का आवाहन उन्हीं कलशों के ऊपर विष्णु ग्रन्थि दिया हुआ कुश रख कर करे।

वि द्र - उपरोक्त कलश स्थापन केवल तीन व्याहृतिओं "ॐ भूर्भुवः स्वः" से भी समयाभाव में किया जा सकता है।

विष्णु ग्रन्थि - गांठ देते समय दाहिनी ओर घुमाकर अपने पीछे की ओर से ऊपर की तरफ से किनारे को डालकर खींच लेने और कस देने से होती है।

आवाहन- हाथ में सुपारी अक्षत पुष्प और तिल लेकर मंत्र पढ़ते हुए क्रमशः उनसवों पर रखता जाये।

1 | मध्य कलश पर - ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। ॐ भूर्भुवः स्वः नारायणाय नमः नारायण इहागच्छ इह तिष्ठ।

2 | ईशान के कलश पर - ॐ भूर्भुवः स्वः संकर्षणाय नमः संकर्षण इहागच्छ इह तिष्ठ।

3 | अग्निकोण के कलश पर - ॐ भूर्भुवः स्वः प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्न इहागच्छ इह तिष्ठ।

4 | नैऋत कोण के कलश पर - ॐ भूर्भुवः स्वः अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्ध इहागच्छ इह तिष्ठ।

5 | वायु कोण के कलश पर - ॐ भूर्भुवः स्वः वासुदेवाय नमः वासुदेव इहागच्छ इह तिष्ठ।

प्रतिष्ठा - ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य वृहस्पतियज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ- ॐ भूर्भुवः स्वः नारायण संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध वासुदेवाः इह सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। इस तरह मंत्र पढ़कर अक्षत सभी कलशों पर रख दे।

पूजन -ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहितेभ्यो नारायणादि देवेभ्यो चन्दनादिकं समर्पयामि। इसी प्रकार सवों को पञ्चोपचार या षोड़शोपचार से पूजन कर प्रार्थना निम्नांकित मंत्रों से करे।

प्रार्थना -

ॐ जितन्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावनः। नमस्तुभ्यं हृषीकेशः महापुरुष पूर्वज।।1

अनादि निधनो देवः शंख चक्र गदाधरः। अक्षय पुण्डरीकाक्षः प्रेत मोक्ष प्रदो भव।।2

यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बन्धनात्। विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे।।3

प्रदक्षिणा -

ॐ तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः। तेषाँ सहस्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि।

इसके वाद साष्टांग प्रणाम करके क्षमा प्रार्थना करे।

प्रार्थना -

मंत्र हीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दनः। यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।1

यदक्षर पदभ्रष्टं मात्रा हीनं च यद्भवेत। तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।2

इसके पश्चात्हवनार्थ वालू का एक हाथ लम्वा चौड़ा और चार अंगुल ऊँचा स्थण्डिल वनाकर पञ्च भू संस्कार से लेकर प्रायश्चित्होम तक की क्रियायें निम्न क्रम से कर अग्निस्थापन करे।

वि. द्रष्ट. -ईश्वर संहिता के अनुकूल अग्नि संस्कार यहां सविस्तार दिया गया है फिर भी आवश्यकतानुसार समयाभाव में केवल पञ्चोपचार द्वारा नाम मंत्र से अग्नि पूजा कर काम चलाया जा सकता है। हवन के लिए कुण्ड या वेदी दोनों ही व्यवहार में लाते हैं।

1 | परिसमूहन - दाहिने हाथ में तीन कुशों को लेकर स्थण्डिल को पश्चिम से आरम्भ कर पूर्व पर्यन्त तीन वार झाड़े और

कुशों को ईशान कोण में फेंक दे ।

2 । उपलेपन - गौ के गोवर से पश्चिम से पूरव तक तीन वार लीपे ।

3 । उल्लेखन - (यजुर्वेदी)कुण्ड या स्थण्डिल के पश्चिम के आधे भाग में दक्षिण ओर दो अंगुल छोड़कर सुवा या कुश की जड़ से पश्चिम से पूर्व तक वारह अंगुल रेखा खींचे । पुनः उससे उत्तर दस अंगुल छोड़कर पश्चिम से ही पूर्व तक वारह अंगुल लम्वी दूसरी रेखा खींचे । पुनः दस अंगुल छोड़ कर उससे उससे उत्तर वारह अंगुल की रेखा पूर्ववत ही खींचे ।
उल्लेखन - (सामवेदी)सामवेदी पांच रेखा खींचे । पहली रेखा दक्षिण ओर एक अंगुल छोड़कर पश्चिम से पूर्व तक पश्चिम ओर आधा स्थण्डिल छोड़कर वारह अंगुल लम्वी खींचे । दूसरी रेखा के पश्चिम छोर से लेकर **21** अंगुल लम्वी दक्षिण से उत्तर तक खींचे जिसमें उत्तर किनारे स्थण्डिल का दो अंगुल शेष रह जाय । तीसरी रेखा पहली रेखा से उत्तर सात अंगुल छोड़कर पश्चिम से पूर्व तक दस अंगुल लम्वी होनी चाहिए । चौथी रेखा तीसरी रेखा से भी सात अंगुल उत्तर पश्चिम से ही पूर्व तक दस अंगुल की खींचे । पांचवी रेखा चौथी रेखा से सात अंगुल उत्तर पश्चिम से हीं पूर्व तक वारह अंगुल लम्वी खींचे ।

4 । उद्धरण - दोनों वेद वाले जिस क्रम से रेखा खीचें हैं उसी क्रम से दाहिने हाथ की अनामिका और अंगुष्ठा से रेखाओं की मिट्टी को उठाकर ईशान कोण में 21 या 22½ अंगुल की दूरी पर फेंक दे ।

5 । अभ्युक्षण - कर्मपात्र से जल लेकर रेखाओं और स्थण्डिल पर गिराते समय हाथ को उलट देना चाहिए ।
पूजन - रेखाओं की पूजा नाम मंत्र से पञ्चोपचार द्वार करे । पड़ी रेखा की पूजा "ॐ आधाराय नमः, अयं गन्धः ।" खड़ी रेखा की पूजा "**ॐ इडायै नमः, ॐ पिङ्गलायै नमः, ॐ सुषुम्नायै नमः** ।"इस तरह से नाम मंत्र से सवों की पूजा करे ।

अग्नि स्थापन

इस प्रकार पंच भू संस्कार करने के पश्चात्अग्नि ताम्रपात्र या मिट्टी के वर्तन में वैसे ही पात्र से ढक कर ले आवे और अग्नि कोण में रखकर "ॐ हूँ फट्स्वाहा।"इस मंत्र को पढ़े । फिर अग्नि का थोड़ा भाग नैऋत कोण में फेंक दे ।
पुनः एक वार गायत्री मंत्र पढ़कर "**अग्नये नमः**" से पञ्चोपचार द्वारा अग्नि की पूजा करे । इसके वाद अग्नि को ईशान कोण में रखकर षोड़श संस्कार करे ।

1 । अग्नि कोण से उठाकर ईशान कोण में अग्नि को स्थापित करे ।

2 । "**ॐ नमो नारायणाय**" इस मंत्र से कुश से अग्नि पर जल छींटे ।

3 । गूलर पीपर या पलाश के दश दश अंगुल के **25** टुकड़ों से "**ॐ नमो नारायणाय स्वाहा**" इस मंत्र से घी लगाकर हवन करे ।

4 । घी और तिल मिलाकर "**ॐ नमो नारायणाय स्वाहा । इदं नारायणाय नमम ।**" इस मंत्र से आठ वार हवन करे ।

5 । "**ॐ श्रीमन्नारायण अग्नि शोधय शोधय स्वाहा**"इस मंत्र से कुश से अग्नि पर पुनः जल छींटे ।

6 । "**ॐ नमो नारायणाय स्वाहा । इदं नारायणाय नमम ।**" इस मंत्र से फल घी और तिल मिलाकर **25** वार हवन करे ।

7 । "**ॐ नमो नारायणाय स्वाहा । इदं नारायणाय नमम ।**" इस मंत्र से सफेद फूल और घी से **25** वार हवन करे ।

8 । नारायण द्वारा लक्ष्मी की कुक्षि में स्थापित अग्नि का ध्यान इस प्रकार करें - **ॐ एषोऽहं देव प्रांदशोऽनुसर्वा पूर्वोह जात स उ गर्भे अन्तः । स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनात्तिष्ठति सर्वतो मुखः ।**

9 । "**ॐ नमो नारायणाय स्वाहा । इदं नारायणाय नमम ।**" इस मंत्र से केवल गोघृत से **25** वार हवन करे ।

10 । **ॐ मह लक्ष्म्यास्सुतो वह्नि नारायणांश सम्भव । तव वैष्णव नामाऽस्ति स्व तेजः परिवर्धय । ।**
इस मंत्र से अग्नि पर अक्षत डालकर उसका वैष्णव जैसा नाम करण करे ।

11 । **ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः स्वाहा ।** इस मंत्र से भात घी और तिल मिला कर **25** वार हवन करे ।

12 | व्यापक व्रह्ममय अग्नि का ध्यान - ॐ षदेतन्मण्डलं तपति तन्महदुक्थन्ता ऋचः सऋचां लोकोथ यदेतदर्चिर्दीप्यते तन्महाव्रतं तानि सामानि स साम्नां लोकोथ य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजू ँ्‌ पिस यजुषां लोकः ।

13 | "ॐ नमो नारायणाय स्वाहा । इदं नारायणाय नमम ।" इससे 25 वार केवल घी का हवन करे ।

14 | "ॐ नमो नारायणाय स्वाहा" इस मंत्र से मधु और घी मिलाकर 25 वार हवन करे ।

15 | "ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये नमम ।" इस मंत्र से भात घी और शक्करमिला कर 5 वार हवन करे ।

16 | "ॐ नमो नारायणाय स्वाहा । इदं नारायणाय नमम ।" इस मंत्र से केवल घी का 25 वार हवन करे । इसके वाद कुण्ड या स्थण्डिल की योनि की तरफ से लाकर रेखाओं पर अग्नि को रखते हुए मंत्र पढ़े ।

स्थापना - ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपव्रुवे । देवां आसादयादिह । ॐ अयन्ते योनिर्ऋत्वियोयतो जातो अरोचथाः तज्जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्द्धया रयिम् । इसके पश्चात् अग्नि लाने वाले पात्र में अक्षत डालकर अग्नि की प्रार्थना करे ।

प्रार्थना -

ॐ चत्वारि शृंगास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधा वद्धो वृषभो रो रवीति महादेवो मर्त्या आविवेश । ।1
एषोहं देव प्रदिशोऽनु सर्वा पूर्वोह जात स उगर्भे अन्तः । स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जना तिष्ठति सर्वतो मुख । ।2
द्विशीर्षं सप्त हस्तं त्रिपादं सप्त जिह्वकम् । वरदं शक्ति पाणि च विभ्राणं स्रुक स्रुवौ तथा । ।3
स्वाहां च दक्षिणे पार्श्वे वामे देवीं स्वधां तथा । रक्तमाल्याम्वरधर मेवमग्निं विचन्तयेत् । ।4
अवाहयाम्यहं देवं श्रुवं समिधमुत्तमम् । स्वाहा कार स्वधाकारं वषट्कारं समन्वितम् । ।5
त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तचिरमित द्युते । आगच्छ भगवन्देव यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव । ।6

पूजन - "ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अयं गंधः ।" इत्यादि पंचोपचार या षोड़शोपचार से ही पूजन करे । इसके वाद अग्नि को प्रज्वलित कर प्रार्थना करे ।

प्रार्थना - ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जात वेदंहुताशनम् । हिरण्य वर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् । इसके वाद अग्नि की सात जिह्वाओं का क्रमशः पूजन करे । 1 । ईशान कोण में "ॐ रक्तवर्णायै दीप्तायै नमः" । 2 । पूर्व में "ॐ श्वेतवर्णायै प्रकाशायै नमः" । 3 । अग्नि कोण में "ॐ सौदामिनी वर्णायै व्याप्यै नमः" । 4 । नैऋत कोण में "ॐ नील वर्णायै मरीच्यै नमः" । 5 । पश्चिम में "ॐ कृष्णवर्णायै तापिन्यै नमः" । 6 । वायु कोण में "ॐ पीत वर्णायै करालायै नमः" । 7 । उत्तर से दक्षिण तक "ॐ अरुणवर्णायै लेलिहायै नमः" । इन मन्त्रों से पञ्चोपचार द्वारा पूजन करे ।

व्रह्मा का वरण - इसके पश्चात्व्रह्मा के वरण का संकल्प करे । "ॐ अद्यामुक शर्माहममुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति द्वारा मोक्ष प्राप्तयर्थ नारायण वलि श्राद्धे व्रह्मणो वरणं करिष्ये ।"

पुनः अग्नि कुण्ड से उत्तर एक आसन रखकर व्रह्मा से कहे "ॐ अस्मिन्नासने आस्याताम्" और व्रह्मा वैठकर कहे 'आस्ये'। इसके वाद किसी पात्र में व्रह्मा का पांव धोता हुआ मंत्र पढ़े "ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्र पादाक्षि शिरोरुवावहे । सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटि युग धारिणे नमः ।" फिर किसी पात्र में चन्दन पुष्प तुलसी युक्त जल व्रह्मा के हाथ में दे । ॐ भूमि देवाग्र जन्मासि त्वं विप्र पुरुषोत्तम । प्रत्यक्षो यज्ञ पुरुषो ह्यर्घोऽयं प्रति गृह्यताम् ।

व्रह्मा इसे लेकर कुछ जल अपने शिरपर डाले तथा शेष अपनी वायीं ओर गिरा दे । इसके वाद "व्रह्मणे नमः" इस मंत्र से आचमन करा कर हाथ धुला दे और पञ्चोपचार से पूजन करे । पुनः वरण का संकल्प करे "ॐ अद्येहामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तिद्वारा मोक्ष प्राप्तयर्थ नारायण वलि श्राद्धे एभिगन्धाक्षत पुष्प माला यज्ञोपवीत कमण्डलु वस्त्रादि भिरमुक गोत्रममुक वेदा ध्यायिनममुक शर्माणं त्वामहं व्रह्म कर्मकर्त्तु व्रह्मत्वे न वृणे ।" यह कहकर द्रव्यादि व्रह्मा के हाथ में दे दे । व्रह्मा उसे हाथ में लेकर "ॐ वृतोऽस्मि" कहे ।

पुनः व्रह्मा कुश से यजमान के शिर पर जल छीटता हुआ यह मंत्र पढ़े "ॐ व्रते न दीक्षामाप्नोति दीक्षामाप्नोति दक्षिणाम्दक्षिणा

श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।"

प्रार्थना - यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

ॐ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्व वेद विदांवरः। तथात्वं ममयज्ञेऽस्मिन्ब्रह्मा भव द्विजोत्तमः।।

इसके वाद कुण्ड के दक्षिण से जाकर ब्रह्मा को पूर्व ओर से लावे और कुण्ड से दक्षिण एक आसन पर पूर्वाग्र तीन कुशों को रखकर उसी पर वैठावे। साथ ही आचार्य को कुण्ड से पश्चिम उत्तर मुख और स्वयं आचार्य से उत्तर पूर्व मुख वैठकर दाहिना घुटना टेक दे।

प्रणीता स्थापन - प्रणीता पात्र को वायें हाथ में लेकर कर्म पात्र से जल भरे और ब्रह्मा और ब्रह्मा की ओर देखकर पूर्व वाले आसन पर रख दे। साथ ही उसे तीन कुशों से ढक दे।

परिस्तरणः - पुनः 48 कुशों को लेकर उनको एक चौथाई 12 कुशों को दाहिने हाथ में ले और पूर्व ओर - पूर्व ः - अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् मंत्र से वेदी से पूर्व में उत्तर अग्रभाग कर ईशान कोण से अग्नि कोण तक कुशों को रख दे। पुनः ।

दक्षिण - ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायस्थ देवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागम्प्रजावती रनमीवा अयस्मा मा वस्तेन ईशत माघस ँसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतो स्यात वह्णीयेजमानस्य पशून पाहि।

इस मंत्र से वेदी से दक्षिण में पूर्व ओर अग्र भाग कर के कुशों को फैला दे। इसके वाद पुनः 12 कुशों को लेकर इन मन्त्रों से -

पश्चिम - ॐ अग्न आया हि वीतये गृणानो हव्य दातये निहोतासत्सि बर्हिषि। वेदी से पश्चिम में उत्तर ओर अग्रभाग करके फैला दे।

उत्तर - ॐ सन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तुनः। इस मंत्र से वेदी के उत्तर में पूर्व ओर अग्र भाग करके शेष 12 कुशों को फैला दे।

पदार्थासादन -1. वेदी से उत्तर पवित्र छेदन के तीन कुश रखे। 2. पवित्र के लिए दो पत्ते वाला कुश उससे उत्तर रखे। 3. प्रोक्षणी पात्र जिसके जल से मार्जन किया जाता है तथा संश्रव रखा जाता है। 4.आज्यस्थाली (हवन करने का वर्तन)। 5. चरूस्थाली (खीर या भात का वर्तन)। 6. समार्जन के लिए पांच कुश (दोहरे सूत से समूचा लिपटे)। 7. सुवा जिससे हवन किया जाता है। 8. गौ का घी। 9.पूर्ण पात्र जिसमें 64, 128 या 256 मुट्ठी चावल हो। 10.शेष सामान दक्षिणा आदि।

पवित्रच्छेदन - ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुना म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। इस मंत्र से कुशों का छेदन करे, पुनः उसपर जल छीटे।

प्रोक्षणी - इसके वाद प्रणीता से जल प्रोक्षण पात्र में भरकर पवित्र से उसे दो वार ऊपर उछाले। पुनः उसी पर पवित्र को रखकर प्रणीता का जल दाहिने हाथ की अनामिका और मध्यमा से प्रोक्षणी के जल पर छीटे।

परिशोधन - सभी यज्ञीय वस्तुओं पर पवित्र से जल छीटे।

चरु और खीर पाक - अग्नि से उत्तर हवन और पिण्ड के लिए चरु और खीर पकावे।

पर्यग्नि करण - जलती लकड़ी या कुश पाक के चारो ओर घुमा दे।

इध्म दान - इसके वाद खड़ा होकर वायें हाथ में एक साथ 3, 5 या 7 दोहरे सूत से इध्म वांधे। उपयमन कुश को लेकर पलाश की तीन समिधों को क्रमशः घी में डुवो डुवो कर चुप चाप डालता जाय।

पर्युक्षण - प्रोक्षणी पात्र से पवित्र सहित जल लेकर ईशान कोण से आरम्भ कर उत्तर तक चारों ओर गिरावे साथ ही पवित्र को प्रणीता पात्र में रखकर प्रोक्षणी को उसके और कुण्ड के वीच में रख ले।

रक्षण - इसके वाद कर्त्ता यज्ञस्थल की रक्षा के लिए अपने वायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से क्रमशः छीटता जाये। पूर्व में - ॐ अग्नये नमः। अग्नि कोण में - ॐ जातवेदसे नमः। दक्षिण में - ॐ सहोजसे नमः। नैऋत कोण में - ॐ अजिरा प्रभवे नमः। पश्चिम में - ॐ वैश्वानराय नमः। वायु कोण में - ॐ नर्यापसे नमः। उत्तर में - ॐ पंक्तिराधसे नमः। ईशान कोण में - ॐ विर्सपिणे नमः। चारो ओर - ॐ श्री यज्ञ पुरुषाय नमः। अपने शिर पर - ॐ आत्मने नमः। सभी वैष्णवों के शिर पर - ॐ सर्वेभ्यः वैष्णवेभ्यो नमः।

इस प्रकार कुश कन्डिका समाप्त कर प्रायश्चित होम करे जिसमें आघार के दो दो, आज्य के दो दो, महाव्याहृति के तीन तीन और वारुणी के पांच पांच कुल 12 होम कर ले। शेष प्रजापति और स्विष्टकृत की आहुति अन्त में दे। साथ ही ब्रह्मा का अन्वारम्भ और संश्रव रखता जाय।

अन्वारम्भ - ब्रह्मा अपने दहिने हाथ में कुश लेकर यजमान के दहिने कंधे पर रखे रहे।

संश्रव - यजमान आहुतियों को अग्नि में छोड़ने के वाद सुव में लगे शेष भाग को प्रोक्षणी पात्र में काछता जाये।

आघार होम (1)- मन ही मन ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम। वोलकर (2)- ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय नमम।

आज्य होम (3)- ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये नमम। (4)ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमम।

महाव्याहृति होम (5)- ॐ भूः स्वाहा इदं अग्नये नमम। (6)ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे नमम। (7)ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम।

इसके वाद ॐ यथा वाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत तद्वैवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिका। शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापं तत्प्रतिहतमस्तु द्विपदे चतुष्पदे सुशान्तिर्भवतु। यह पढ़कर यजमान के शिरपर जल छीटे।

पञ्चवारुणी (8) - ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां नमम।

(9)ॐ सत्वन्नो अग्नेऽवमोभवोतो ने दिष्टो अस्या उषसोव्युष्टौ अवय स्वनो वरुण ँराणो वीहि मृडीक ँसुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां नमम।

(10)ॐ अयश्चाग्नेऽस्यनभि शस्ति पाश्च सत्यमित्व मया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ँस्वाहा इदमग्नये नमम।

(11)ये तेशनं वरुण ये सहस्र यज्ञीयाः पाशावितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोतर्विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्भ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम।

(12)ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँश्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय नमम।

प्रजापत्य (13) - ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम। इसके वाद अन्वारम्भ छोड़ दे । संश्रव भी न रखे। साथ ही नीचे के 30 मंत्रों के लिए 120 वार श्रुवा से घी निकाल कर हवन के पात्र में रख ले। इसे चतुर्गृहीत घी कहते हैं और चार वैष्णव मिलकर हवन प्रारम्भ करे।

चतुर्गृहीत होम

1। ॐ युंजेत मन उत यजते धियो विप्रा विप्रस्य वृहतो विपश्चितः। विहोत्रादधेव पुनाविदेकं इन्म ही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

2। ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँसुरे स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

3। ॐ ईरावती धेनु मतीहि भूतं सूय वसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवीमभितोमयूरवैः स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

4। ॐ देवश्रुतौ देवेष्वाघोषतं प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्ति। उर्ध्वे यज्ञं न यतं मा जिह्वा तं स्वं गोष्ठ मा वदतं देवी दुर्ये आयुर्मानिर्वा दिष्टं प्रजां मानिर्वोदिष्टमत्र रमेथां वर्ष्मन्पृथिव्याः स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

5। ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजां ँसि। यो अस्कभा यदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाण स्त्रे धोरुगाय विष्णवेत्वा स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

6। ॐ दिवो वा विष्ण उत्त वा पृथिव्या महोवा विष्णउरोरन्तरिक्षात्। उभाहि हस्ता वसना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणा क्षेत सव्या द्विष्णवे त्वा स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

7। ॐ प्रतद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे स्वधि क्षियंतिभुवनानि विश्वा स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

8। ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा इदं विष्णवे नमम। इसके बाद पुरुष सूक्त के 16 मंत्रों से हवन करे।

9। ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिँ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्स्वाहा इदं विष्णवे नमम। इसी प्रकार पुरुष सूक्त के सभी मंत्रों द्वारा अन्त में इदं विष्णवे नमम। इतना त्याग वाक्य जोड़कर हवन किया जायेगा। इसके पश्चात्पुरुष सूक्त के उत्तरानुवाक के 6 मंत्रों से हवन किया जायेगा।

यथा - 1। ॐ अद्भ्यः संभृतं पृथिव्ये रसाच्च विश्व कर्मणः समवर्त्तताग्रे तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

2। ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य वर्ण तमसः परस्तात्तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था अयनाय विद्यते स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

3। ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः अजायमानो वहुधा विजायते तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्हतस्थु भुवनानि विश्वा स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

4। ॐ योदेवेभ्यो आतपति यो देवानां पुरोहितः पूर्वो यो देवेभ्य जातो नमो रुचाय ब्राह्मये स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

5। ॐ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यातस्य देवा असन्वशे स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

6। ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्इष्णन्निषाणमुम्म इषाण सर्व लोकम्म इषाण स्वाहा इदं विष्णवे नमम।

इन आहुतियों के आगे नारायणानुवाक और नारायण मंत्र से इस प्रकार आहुतियाँ देवे।

यथा - ॐ सहस्र शीर्ष देवं विश्वाक्षं विश्व शम्भुवम्। विश्वं नारायण देवमक्षरं परमं प्रभुम्स्वाहा इदं नारायणाय नमम।

इसी प्रकार नारायणानुवाक(सू सं प्रकरण) के सभी मंत्रों से आहुतियां दे। सभी मंत्रों के अन्त में "स्वाहा इदं नारायणाय नमम" जोड़ता जावे।

इसके पश्चात्तिल घी से 108 वार नारायण मंत्र से हवन करे। यथा - ॐ नमो नारायणाय स्वाहा इदं नारायणाय नमम।

इसके आगे चरु (भात), गुड, घी मिलाकर विष्णु सूक्त के (सू सं प्रकरण)प्रत्येक मंत्र से एकए क आहुति दे। यथा -

ॐ विष्णोर्नकं वीर्याणि प्रवोचंयः पार्थिवानि विममे रजा ँसि यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थ विचक्रमाणस्त्रे धोरुगायः स्वाहा। इदं विष्णवे नमम।इस प्रकार सभी मंत्रों से हवन करे। पुनः चरु गुड़ और घी से ही द्वादश नारायण केशवादि नामों द्वारा अन्त में त्याग वाक्य जोड़ कर हवन करे।

1। ॐ केशवाय स्वाहा इदं केशवाय नमम। 2। ॐ नारायणाय स्वाहा इदं नारायणाय नमम। 3। ॐ माधवाय स्वाहा इदं माधवाय नमम। 4। ॐ गोविन्दाय स्वाहा इदं गोविन्दाय नमम। 5। ॐ विष्णवे स्वाहा इदं विष्णवे नमम। 6। ॐ मधुसूदनाय स्वाहा इदं मधुसूदनाय नमम। 7। ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा इदं त्रिविक्रमाय नमम। 8। ॐ वामनाय स्वाहा इदं वामनाय नमम। 9। ॐ श्रीधराय स्वाहा इदं श्रीधराय नमम। 10। ॐ हृषीकेशायस्वाहा इदं हृषीकेशाय नमम। 11। ॐ पद्मनाभायस्वाहा इदं पद्मनाभाय नमम। 12। ॐ दामोदराय स्वाहा इदं दामोदराय नमम।

पुनः केवल गोघृत से ॐ विष्णवे स्वाहा इदं विष्णवे नमम इस मंत्र से 108 वार आहुति देकर पुनः आगे के मंत्रों से आहुतियां दे।

1। ॐ नारायणाय स्वाहा इदं नारायणाय नमम। 2। ॐ संकर्षणाय स्वाहा इदं संकर्षणाय नमम। 3। ॐ प्रद्युम्ननाय स्वाहा इदं प्रद्युम्नाय नमम। 4। ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा इदं अनिरुद्धाय नमम। 5। ॐ वासुदेवाय स्वाहा इदं वासुदेवाय नमम। 6। ॐ

अनन्ताय स्वाहा इदं अनन्ताय नमम। 7। ॐ गरुड़ाय स्वाहा इदं गरुड़ाय नमम। 8। ॐ विष्वकसेनाय स्वाहा इदं विष्वकसेनाय नमम। 9। ॐ चण्डाय स्वाहा इदं चन्डाय नमम। 10। ॐ प्रचण्डाय स्वाहा इदं प्रचण्डाय नमम। 11। ॐ कुमुदाय स्वाहा इदं कुमुदाय नमम। 12। ॐ कुमुदाक्षाय स्वाहा इदं कुमुदाक्षाय नमम। 13। ॐ जयाय स्वाहा इदं जयाय नमम। 14। ॐ विजयाय स्वाहा इदं विजयाय नमम। 15। ॐ सुमुखाय स्वाहा इदं सुमुखाय नमम। 16। ॐ जयन्ताय स्वाहा इदं जयन्ताय नमम। 17। ॐ धात्रे स्वाहा इदं धात्रे नमम। 18। ॐ विधात्रे स्वाहा इदं विधात्रे नमम। 19। ॐ सर्व जिते स्वाहा इदं सर्वजिते नमम। 20। ॐ प्रियंकराय स्वाहा इदं प्रियंकराय नमम। 21। ॐ ज्ञाननिकेताय स्वाहा इदं ज्ञान निकेताय नमम। 22। ॐ सुप्रतिष्ठिाय स्वाहा इदं सुप्रतिष्ठाय नमम। 23। ॐ भद्राय स्वाहा इदं भद्राय नमम। 24। ॐ सुभद्राय स्वाहा इदं सुभद्राय नमम। 25। ॐ नन्दाय स्वाहा इदं नन्दाय नमम। 26। ॐ सुनन्दाय स्वाहा इदं सुनन्दाय नमम। 27। ॐ नित्येभ्यो स्वाहा इदं नित्येभ्यो नमम । 28। ॐ मुक्तेभ्यो स्वाहा इदं मुक्तेभ्यो नमम। 29। ॐ सर्वेभ्यो वैष्णवेभ्यो स्वाहा इदं सर्वेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमम।

इसके वाद व्रत्मा का अन्वारम्भ करके सभी चीजों को मिलाकर स्विष्टकृत की आहुति दे।

स्विष्टकृत - ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा इदं अग्नये स्विष्ट कृते नमम। पुनः अन्वारम्भ सहित महाव्याहृति, पञ्चवारुणी और प्रजापति (जो पहले लिखा जा चुका है) की आहुतियाँ देकर संश्रव रखता जाय।

संश्रव प्रासन - प्रोक्षणी पात्र में प्रत्येक होम के पश्चात् काछे गये घी को या तो पी ले या सूंघ ले।

पूर्णपात्र दान - ॐ अद्यामुक तिथावमुक शर्माहमस्मि नारायण वलि श्राद्ध होम कर्माणि कृताकृतावेक्षण रुप ब्रह्म कर्म दक्षिणात्वे नेदं सद्रव्यं पूर्ण पात्रं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय सम्प्रददे, ॐ तत्सन्नमम कहकर व्रत्मा के हाथ में दे, व्रत्मा ॐ स्वस्ति कहकर लेवे।

सेंचन - इसके वाद प्रणीता का जल पवित्र से सिर पर छींटते हुए यह मंत्र पढ़े -ॐ सुमित्रिया न आप औषधयः सन्तु । पुनः इस मंत्र से ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः, प्रणीता का जल ईशान कोण में उलट देवे।

पवित्रहोम - पवित्र को ॐ स्वाहा इदं प्रजापतये नमम कहकर अग्नि में डाल देवे। पुनः वर्हि होम करे।

वर्हि होम - परिस्तरण के कुशों में से एक मुट्ठी कुश जिस क्रम से विछाया है उसी क्रम से उठाकर घी लगा ले और इस मंत्र से आहुति दे। ॐ देवा गातु विदो गातुंवित्वा गातुमित मनस स्पत इमंदेव यज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा इदं वाताया नमम।

पूर्णाहुति - नारियल में घी लगाकर लाल वस्त्र लपेट दे और फल पुष्प अक्षत पान सुपारी घी लेकर यह मंत्र पढ़कर अग्नि में छोड़ दे ॐ प्रजापति ऋषिर्विराड़ गायत्री छन्द इन्द्रो देवता यशस्कामस्य यजनीय प्रयोगे विनियोगः। ॐ पूर्ण होमं यश से जुहोमि योऽस्मै जुहोति वरमस्मै ददाति वरं वृणे यशसा भामि लोके स्वाहा इदमिन्द्राय नमम। इस प्रकार हवन समाप्त करे।

स्थण्डिल से पश्चिम भूमि को लीप पोत कर पिण्ड के लिए उत्तर दक्षिण वालू या पीली मिट्टी की चित्र के अनुसार वेदी वनावे। उसे चावल के चूर्ण से 12 खण्ड करे साथ ही द्वादश नारायण के लिए विष्णु ग्रन्थि के कुशों पर आवाहन और पूजन करे।

पुनः उनके पश्चिम वालू की वेदी वनाकर उनपर दक्षिण से आरम्भ कर 12 द्वादश पिण्ड दे। इसके पश्चात्नित्य मुक्त और सर्व वैष्णव को भी तीन पिण्ड दे। इस प्रकार सव मिलाकर 15 पिण्ड होंगे।

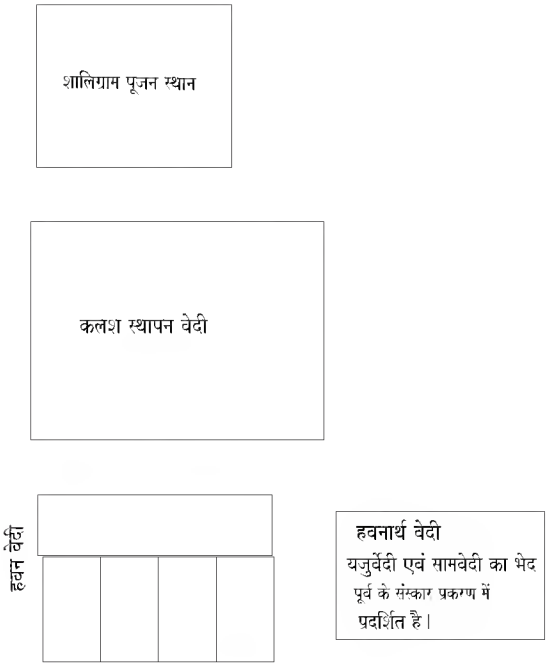

केशव
नारायण
माधव
गोविन्द
विष्णु
मधुसूदन
त्रिविक्रम
वामन
श्रीधर
हृषीकेश
पद्मनाभ
दामोदर

नित्य
मुक्त
सर्व वैष्णव

शुरु के ऊपर से नीचे वाले वारह प्रकोष्ट द्वादश भगवान के पूजन के लिये हैं। उसके वाद के प्रकोष्ट भोजन एवं उसके वाद पिण्ड के लिए प्रकोष्ट हैं। इसीतरह से नित्यादिकों के लिए भी चित्र वने हैं, क्रमशः पूजा भोजन एवं पिण्ड हेतु। पिण्ड के लिए सभी घरों में चक्र * का भी चिन्ह वना देना चाहिए।

द्वादश नारायण श्राद्ध

संकल्प - कर्त्ता पूर्व मुख वैठकर हाथ में तिल अक्षत द्रव्य कुश और सुपारी लेकर इस तरह संकल्प करे। **ॐ अद्येहामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति द्वारा मोक्षप्राप्त्यर्थ नारायण वलि श्राद्धे केशवादि दामोदर पर्यन्तानां देवानामावाहन पूजन पूर्वकं पिण्ड दानमहं करिष्ये।** पढ़कर अक्षतादि भूमि पर रख दे।

आसन संकल्प - ॐ अद्येहामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति द्वारा मोक्षप्राप्त्यर्थं नारायण वलि श्राद्धे केशवादि दामोदर पर्यन्त श्राद्धेषु इमानि आसनानि विभज्य युष्मभ्यं स्वाहा नमः। यह कहकर पूर्वाग्र वारह पत्तों को रखकर उनपर विष्णु ग्रन्थि वाले 12 कुशों को पूर्वाग्र ही रखे। फिर अक्षत पुष्प लेकर आवाहन करे।

आवाहन - ॐ केशवाय नमः केशवमावाहयामि। क्रमशः कुश पर अक्षत छीटे।

ॐ नरायणाय नमः नारायणमावाहयामि। ॐ माधवाय नमः माधवमावाहयामि। ॐ गोविन्दाय नमः गोविन्दमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि। ॐ मधुसूदनाय नमः मधुसूदनमावाहयामि। ॐ त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रममावाहयामि। ॐ वामनाय नमः वामनमावाहयामि। ॐ श्रीधराय नमः श्रीधरमावाहयामि। ॐ हृषीकेशाय नमः हृषीकेशमावाहयामि। ॐ पद्मनाभाय नमः पद्मनाभमावाहयामि। ॐ दामोदराय नमः दामोदरमावाहयामि। इसके बाद अर्घ पात्र बनावे।

अर्घ्य- प्रत्येक के आगे अर्घ पात्र या दोना रखकर उनमें एक एक पवित्र डालकर मंत्र से जल दे ।

जल - ॐ शन्नो देवो रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये संयोरभिस्रवन्तु नः।

यव - ॐ यवोऽसि यवयाऽस्मद्द्वेषो यवयारातो।

पुनः चन्दन पुष्प डालकर कहे ॐ द्वादश अर्घपात्राणामर्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु ।

इस प्रकार अर्घ पात्र वनावे और दक्षिण से प्रारम्भ कर एक अर्घ पात्र को उठावे और इसका पवित्र पूर्व रखे हुए आसनों में प्रथम दक्षिण के आसन पर एक दूसरे दोने में रख दे और अर्घ पात्र को वायें हाथ में रख दायें हाथ से ढक वायें कन्धे पर ले जाकर यह मंत्र पढ़े। ॐ या दिव्या आपः पयसा संवभूवुर्या आन्तरिक्षा उतपार्थि वीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः श ँ स्योना सुहवा भवन्तु। अनन्तर कन्धे पर से हटाकर दायां हाथ में संकल्पार्थ जलादि ले संकल्प करे - ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य भगवत्लोक प्राप्ति कामः नारायण वलि श्राद्धे एष अर्घः नारायणाय स्वाहा। पढ़कर उसी पवित्र पर जल गिराकर अर्घ पात्र को आगे रख दे। इसी प्रकार शेष नामों द्वारा शेष स्थानों में भी अर्घ देवे। "ॐ या दिव्या ....." यह प्रत्येक अर्घ देने के पूर्व वार वार पढ़ा जायगा। द्वादश नाम आवाहन प्रकरण या हवन प्रकरण में आया है।

पूजन - क्रमशः अर्घ के पश्चात्सभी आसनों पर चन्दन पुष्प धूप दीप नैवेद्य पान सुपारी यज्ञोपवीतादि रख और सवों को स्पर्श करते हुए संकल्प करे। ॐ एतानि गन्ध पुष्पादीनि केशवादि दामोदर पर्यन्तेषु अक्षय्यमस्तु स्वाहा। और पुनः हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ॐ अभीप्सं श्राद्धनामर्चन विधे परिपूर्णतास्तु।

भोजन - प्रत्येक आसन के आगे चावल चूर्ण से चौकोन मण्डल वनाकर सवों में किसी पात्र या पत्ते पर ही भोजन परोसे और पात्र को स्पर्श कर यह मंत्र पढ़े। ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतम्जुहोमि स्वाहा। विष्णो हव्य रक्षस्व पढ़कर अन्न में दाया हाथ का अंगूठा लगा अनन्तर हाथ में जौ लेकर पंक्ति वारण करे। ॐ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः पढ़कर पात्र के चारो ओर गिरा दे। पुनः हाथ में कुश अक्षत जौ लेकर संकल्प करे।

संकल्प - ॐ एतदन्नं सोपस्करम मृत रूपं हव्यं केशवाय स्वाहा सम्पद्यताम्नमम। इसी प्रकार शेष 11 स्थानों में भी इसी प्रकार अन्न परोसना और मंत्र वोलना होगा।

इस क्रिया के पश्चात्उपरोक्त सभी आसनों के आगे एक हाथ हट कर पिण्ड देने के लिए 12 वेदियाँ वालू या मिट्टी की एक हाथ लम्वी चौड़ी और चार अंगुल ऊँची वनावे।

रेखोल्लेखन - ॐ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः पढ़कर पिंजली से (एक साथ 7 वन्धे कुशों)से एक वित्ता की रेखा प्रत्येक वेदी पर वीच में वनावे।

अंगार भ्रमण - ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुरा सन्तः स्वधया चरन्ति। पुरा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लो कात्पणुदात्मस्मात्। यह पढ़कर वेदी के चारो ओर अंगार घुमावे।

आस्तरण - प्रत्येक वेदी की रेखाओं पर तीन तीन कुशों को विछावे और अवनेजन के लिए प्रत्येक के आगे एक एक

पात्र रखकर उसमें चन्दन पुष्प तुलसी जौ कुश और लेकर अवनेजन दे।
अवनेजन - ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य नारायण वलि श्राद्धे केशव पिण्डे स्थाने अत्रावने निक्ष्व स्वाहा यह पढ़कर वेदी के कुशों पर थोड़ा सा जल देव तीर्थ से गिराकर पात्र को पुनः यथा स्थान पर रखे।
पिण्ड - वना हुआ हविष में मधु घी तिल और पंचमेवादि मिलाकर विल्व का आकार वनाकर वांया हाथ में रखकर दायां हाथ में संकल्पार्थ अक्षतादि लेकर संकल्प करे ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य नारायण वलि श्राद्धे एष पिण्डः केशवाय स्वाहा कहकर पिण्ड दे दे।
प्रत्यवनेजन - अवनेजन से वचे जल या दूसरा ही जल उसी अवनेजन वाले पात्र में रखकर पिण्ड पर दे ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य नारायण वलि श्राद्धे केशव पिण्डे स्थाने प्रत्यवने स्वाहा। और आगे भी शेष सभी पिण्डों पर इसी क्रम से देकर एक वार अन्त में सवों को चन्दन पुष्प धूप दीप नैवेद्य सुपारी पान तीन सूत इत्यादि द्वारा पूजन कर संकल्प करे - ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य भगवतलोक प्राप्तिकामः केशवादि दामोदर पर्यन्तेषु गन्धाद्युपचारा स्वाहा। और सभी पिण्डो पर अक्षतादि डाल दे।
प्रार्थना - ॐ पिण्डार्चनविधे परिपूर्णतास्तु । ॐ एभिर्पिण्ड दानैः अमुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य भगवत लोक प्राप्तिरस्तु।
अक्षय्योदक - सभी पिण्डों के समीप एक एक दोना रख उनमें अक्षत पुष्प और जल देकर अलग अलग संकल्प करे - ॐ केशवस्य दत्तमन्न पानादिकमुपतिष्ठताम्। ॐ नारायणस्य दत्तमन्न पानादिकमुपतिष्ठताम्।इसी प्रकार सभी द्वादश नामों में षष्ठी विभक्ति जोड़ वाक्य वना सभी पिण्डों पर जल डाल दे। इसके पश्चात् किसी पात्र में -
पयोधारा - दूध जल चन्दनादि लेकर नारायणानुवाक के एक एक मंत्र द्वारा द्वादश पिण्डों पर गिरावे। मंत्र के अन्त में ॐ प्रथम केशव पिण्डे पयोधारा स्वाहा। नीचे के श्लोकों को पढ़ते हुए सभी पिण्डों पर एक ही साथ दूध की धारा देवे।
ॐ अनादि निधनो देवः शंख चक्र गदाधरः। अक्षयः पुण्डरीकाक्षः प्रेत मोक्षप्रदो भव।।1
अतसी पुष्प संकाशं पीत वास समच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम्।।2
कृष्ण कृष्ण कृपालोस्त्वम गतीनांगतिर्भव। संसारार्णव मग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ।।3
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वर प्रद। अनेन तर्पणे नाथ प्रेत मोक्षप्रदो भव।।4

इसके पश्चात्नित्य, मुक्त और सर्व वैष्णव निमित्त श्राद्ध करे। उपरोक्त विधि से ही इन सवों के निमित्त भी तीन पूर्व वत्वेदी वनावे और विष्णु ग्रन्थि वाला तीन कुश पूर्वाग्र आसनों के ऊपर हाथ में अक्षत पुष्प तुलसी सुपारी आदि लेकर संकल्प करे - ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य भगवतलोक प्राप्तिकामः नारायण वलि श्राद्धांगभूत नित्य मुक्त वैष्णवानां श्राद्ध त्रयं करिष्ये । यह वोलकर अक्षतादि भूमि पर रख दे।
आसन - ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक ..... नित्य मुक्त सर्ववैष्णवेभ्यः इमानि आसनानि स्वाहा। अमुक शव्द जहां भी लिखा है वहां सभी उच्चारणीय विषयों को उच्चारण कर लेना चाहिए। पूर्वलिखित द्वादश नारायण श्राद्ध के ही सदृश यह श्राद्ध भी होगा।
अतः अक्षरशः वे सव विधियाँ यहां नहीं दुहरायी गयी हैं। अतः इस श्राद्ध में आसन दान के पश्चात्पूर्ववत्ही अर्घ्य पूजन भोजन पंक्तिवारण संकल्प अवनेजन पिण्ड प्रत्यवनेजन देकर पूजन करे। उपचार अर्चन के समय ॐ तत्तत्स्थान में नित्येभ्यः मुक्तेभ्यः सर्ववैष्णवेभ्यः नाम वोलता जावे।
पूजन - चन्दन पुष्प धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा आदि चढ़ाकर ॐ पिण्डार्चन विधेः परिपूर्णताऽस्तु।
प्रार्थना - ॐ एभिः पिण्डदानैरमुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्ति द्वारा भगवत्प्राप्तिरस्तु।
फिर नित्य मुक्त सर्ववैष्णव स्थानीय कुशों के ऊपर जल गिरावे - ॐ शिवा आपः सन्तु। उत्तर - सन्तु शिवा आपः। फूल -

ॐ सौमनस्यमस्तु। उत्तर - अस्तु सौमनस्यम्। जौ और तिल - ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु। उत्तर - ॐ अस्तु अरिष्टम्।
अक्षय्योदक - प्रत्येक पिण्ड के समीप एक एक दोना रखकर उसमें जल देकर और हाथ में कुश तिल जल लेकर पूर्व रखे हुए दोने को भी हाथ में ले संकल्प करे - ॐ अद्य.....नित्यानां दत्तमन्न पानादिकमुपतिष्ठताम्। ॐ अद्य.....मुक्तानां दत्तमन्न पानादिकमुपतिष्ठताम्। ॐ अद्य.....सर्व वैष्णवानां दत्तमन्न पानादिकमुपतिष्ठताम्। और सभी पिण्डों के ऊपर डाल दे। पुनः एक पात्र में दूध जल तुलसी और चन्दन डालकर प्रत्येक पिण्ड पर इन मंत्रों को पढ़ते हुए क्रमशः गिराता जाय।
प्रथम पिण्ड पर - ॐ तदस्य प्रियमपि पाथो अस्यां नरो यत्रदेवयवो मदन्ति। उरुक्रमस्य सहि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः।
दूसरे पिण्ड पर - ॐ परो मात्रया तनु वा वृधना नते महित्वमन्वश्नुवन्ति। उभेते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णोर्देवत्वं परमस्य वित्से।
तीसरे पिण्ड पर - ॐ प्रविष्णवे शषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे। य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित पदेभि।
इसके पश्चात्भगवान एवं सभी पिण्डों को कर्पूर की आरती कर प्रदक्षिणा और साष्टांग प्रणाम करे।
दक्षिणा - हाथ में द्रव्य सुपारी और अक्षत कुश लेकर संकल्प करे - ॐ अद्येहामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति द्वारा भगवत्प्राप्त्यर्थं कृतैतन्नारायण वलि श्राद्ध कर्मणः प्रतिष्ठार्थम् यथाशक्ति द्रव्यं यथा नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ॐ तत्सन्नमम।
यह पढ़कर ब्राह्मणों के हाथ में द्रव्यादि दे देवे।
पंचकलशदान - ॐ अद्येहामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति द्वारा भगवत्प्राप्त्येऽनुष्ठित नारायण वलि श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिमे पंच कलशाः नारायणादि देवताकाः सप्रतिमाः सजल वस्त्रोपवित नारिकेलास्तत्तद् ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे ॐ तत्सन्नमम।
विसर्जन - ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजन्नाः स्थिरै रङ्गैस्तुष्टवा ँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। यह पढ़कर सभी कुशों के ऊपर (जिन कुशों के ब्राह्मण वनाये गये हैं)अक्षत डाल दे और कुशों के दिये गये ग्रन्थियों को खोल दे।
आचार्य दक्षिणा - ॐ अद्येहानुष्ठित नारायण वलि कर्मणः साङ्गतार्थं इमां सुपूजितां सवत्सां धेनुं तन्निष्क्रयं वा आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॐ तत्सन्नमम। यह पढ़कर दक्षिणा में गो या द्रव्य आचार्य को देकर प्रार्थना करे -
प्रार्थना - ॐ अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्तयेऽनुष्ठित नारायणवलि कर्मणि पूजन तर्पण श्राद्ध होमादिषु यन्नयूनाधिकम्तद्भवतां वैष्णव ब्राह्मणानां तीर्थं विष्णोः प्रसादाच्च सर्वपरिपूर्णमस्तु। यह सुनकर ब्राह्मण उत्तर देवे - अस्तु परिपूर्णम्।
विष्णु स्मरण - प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणाद्देव तद्विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुतिः।
ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।
इसके पश्चात्पिण्ड सहित भगवान की प्रदक्षिणा कर साष्टांग करे। और हाथ में जल लेकर भगवान के संमुख हो यह मंत्र वोलकर सभी कृत्यों को व्रह्मार्पण करे।
व्रह्मार्पण -
ॐ ब्रह्माग्नौ ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु। यह पढ़कर जल भगवान के सामने गिरा दे और पूर्व पृष्ठ में लिखे हुए विष्णु सूक्त का पाठ करे तथा सभी पिण्डों को पवित्र जलाशयादि में प्रवाह कर या गौओं को खिलाकर स्वयं स्नान कर पुनः शालिग्राम भगवान का पूजन कर वैष्णवों को भी चन्दन पुष्प माला वस्त्रादि से अलंकृत कराकर भोजन करावे और दक्षिणा देकर आदर पूर्वक विदा करे। या अपने गृह सूत्र के अनुसार शेष क्रियाओं को कर ले। अन्त में स्वयं भी भोजन करे और बचे हुए जूठे अन्न से थोड़ा सा अन्न भूमि पर तीन कुशों के ऊपर रख कर श्राद्ध को समाप्त करे।

संहार

माघे शुभे शुचि दले भुजगेश तिथ्याम्। चन्द्रे दिविन्दु नभसाक्षि पराभवाब्दे।।
संगृह्य पुस्तकममुं गरुड़ध्वजस्य।पादाम्बुजे जन हिताय समर्पयामि।।

समस्त श्री वैष्णव जनों के उपराकार्थ व्रह्ममेध संस्कार और नारायण वलि श्राद्ध पद्धति श्री 1008 श्री स्वामी पराङ्कुशाचार्य्य सरौती मठाधीश द्वारा संकलित और श्रीमन्नारायण के युगल श्री चरणों में सादर समर्पित।

।।इति शुभंस्यादनिशम्।।

मुद्रक ः पं चन्द्रदेव शर्मा 'साहित्य रत्न'
नं 286 - 1000 18 अगस्त 1954 ई
चान्द प्रेस जहानाबाद गया ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

अर्चा गुणगान

विशेष लयात्मक छन्द

रचयिता

श्री स्वामी पराङ्कुशाचार्य जी महाराज

सरौती स्थानाधीश

प्रकाशक

श्रीस्वामी पराङ्कुशाचार्य ग्रन्थमाला

प्रकाशन समिति

तृतीय संस्करण

28 फरवरी 1981

प्रथम वार्षिक वैकुण्ठोत्सव के अवसर पर

1। श्रीनिवास प्रताप दिनकर

श्रीनिवास प्रताप दिनकर भ्राजता सव लोक मे ।
सेा दीन जन के तारने प्रभु आवते भूलोक में ।।1
वह कृपा चितवन नाथ के जन को सनाथ वनावता ।
वारीश करुण ऊमड़ घुमड़ अघ सकल दूर दहावता ।।2
ज्यों दिव्य दक्षिण हस्त में ज्यों अस्त्रराज विराजहीं ।
त्यों तेजमय अति पाँञ्चजन्यसु वामकर वर गाजहीं ।।3
है कान्तिमत सुन्दर पीताम्वर अति विचित्र किनारियाँ ।
सो काछनी कटि में सुहावनी सवन के मन हारियाँ ।।4
वनमाल औ मनिमाल अगनित पुष्प मोतिन लर रहे ।
पुनि तैसेहीं भगवान के भगवान माला वन रहे।।5
औ श्रवण कुण्डल मुकुट भूषण गणन मे वहु मणिगणा ।
जनु श्याम घन में दामिनी वहु चन्द्र रवि तारे गणा ।।6
प्रभु दिव्य दक्षिण हस्त से निज चरण शरण वतावहीं ।
ना भव तुम्हारे जानु लेा सेा वाम से दिखलावहीं ।।7
वह ज्येाति जगमग जासु दश दिश विदिशहूँ छायी महाँ ।
सेा देखते दरशक गणों के भागते अघतम महाँ ।।8
फणिराज पंकज रूप धर कर दिव्य आसन सेाहहीं ।
हेा दल अनेकों पादतल सेा लखत मुनि मन मेाहहीं ।।9
व्यूह पर वैभवन व्यापेहुँ कौन पाते यत्न से।
भगवान अर्चा रूप धरकर जनन से मिल सुगम से ।।10
पर्ण फल जल पुष्प से सेवा सुलभ अति प्रेम से ।
इसके लिये यह तन मिला है व्यास के उपदेश से ।।11
भूधर समान न और भूधर भूमि पर पाते कहीं ।
सदग्रंथ में जव देखते इनके सुयश सर्वत्र हीं ।।12
है धन्य कुधर शिखर अहेा तिहुँलेाक नायक को धरे ।
ले साथ में आकाश गंगा धार झरझर झरझरे ।।13
औ अनंता अलवार के पावन सरेावर हैं जहाँ ।
है मुक्ति की ईच्छा जिसे वैकुण्ठ में रहते तहाँ।।14
भाष्यकार स्वयं जिन्हें वन श्वसुर गुरु सेवा किये ।
सव दास को शिक्षा दिये अरु आप पावन यश लिये ।।15
वह धन्य नर जो देखते पल स्वप्न में उस ठाम को ।

सेा देव हैं नर नर नहीं हैं नरन में भगवान को ।।16
भव भीति का न डर कभी जो मन वसे हरिगीतिका ।
आशा वड़ी युग चरण की है है कृपा परिपालिका ।।17
है प्रणतपाल कृपालु हरि के चरण धर जीवन लहो ।
सो दीन वंधु कृपालुता वश द्रवित होंगे ही अहो ।।18

2। श्रीनिवास भगवान हमहि

श्रीनिवास भगवान हमहि अपने अपनाये जी।
ग्रन्थन में यह मिलत सवन में
नरतन सुर दुर्लभ भारत में
देकर के भगवान हमहिं
वैष्णव वनवाये जी।। श्रीनिवास भगवान .....
पञ्चरात्र से शास्त्र मनोहर
गीता के ज्ञान अति सुन्दर
ऐसे वचन सुनाय सुगम
मारग वतलाये जी ।। श्रीनिवास भगवान .....
भाष्यकार के चरण लगाकर
भगवत जन के सुहृद वनाकर
इनकर सेवा देकर सुलभ
उपाय वताये जी ।। श्रीनिवास भगवान.....
दीन हीन लख कृपा किये प्रभु
आरत हर गुण प्रकट किये हरि
युगल चरण अति सुन्दर
सिद्ध उपाय वताये जी ।। श्रीनिवास भगवान.....

3। श्रीनिवास आश्रित हित

श्रीनिवास आश्रित हित अपना अर्चा रूप वनाते हैं।
द्रवित हृदय से आये गिरि पर वेङ्कटनाथ कहाते हैं।।
व्रात जनों के रक्षण हित रक्षा कङ्कण वन्धवाते हैं।
शरणागत पर प्रेममयी शीतल अँखिया दिखलाते हैं।।
दक्षिण कर से सव प्रकार युग चरण उपाय वताते हैं।
त्यों वामे करसे भव के लघु तरतर भाव वताते हैं।।
अन्य हाथ में शङ्ख सुदर्शन धर ऊँचे दिखलाते हैं।
डरो नहीं तुम डरो नहीं तुम डरो नहीं हम आते हैं।।
मैं हूँ अखिल लोक के नायक मुकुट पहन वतलाते हैं।

देखो वेद पुराण सूत्र गण मेरे ही गुण गाते हैं।।

4। वेङ्कट गिरि पर स्वामी
वेङ्कट गिरि पर स्वामी वैकुण्ठ से ही आये।
श्री श्रीनिवास जन को यह भाव हैं बताये।।
है हस्त कमल सुन्दर दक्षिण अधो अपाने।
करके उपाय सर्वोपरि चरण को दिखाये।।
है शङ्ख चक धर के प्रतिद्वन्द को हटाते।
तैसे ही वाम करसे भव नाप को बताते।।
जो दिव्य मुकुट माथे त्रैलोक्य नाथ नाते।
है दास को यहाँ से वैकुण्ठ को ले जाते।।
यह गिरि समान गिरिवर ब्रह्माण्ड में न पाते।
इनके समान जनहित तिहुँलोक में न आते।।
वह दीन वचन सुनकर हरि दूर से ही धाते।
भगवान कृपा करके हर रूप भी दिखाते।।

5। वेङ्कट गिरिपर भगवान
वेङ्कट गिरिपर भगवान जी, आये अधम उधारन।
भू योगीश्वर महत भट्टवर, भक्तिसार अगवान जी।।आये...
कुलशेखर श्रीयोगी वाहन, भक्तचरण रजमान जी ।आये...
जामातृ परकाल वीरवर, जिनसे लुटाये भगवान जी। आये...
भाष्यकर यामुन मुनि योगी, राममिश्र परधान जी। आये...
स्वामी पुण्डरीक लोचन वर, कृपा किये जनजान जी।आये...
नाथमुनिहुँ शठकोप मुनीश्वर, विष्वकसेन परधान जी। आये...
माता श्री लक्ष्मी महारानी, दया करो जन जान जी।आये...
दीनहिं के हित भूतल आये, जानत परम सुजान जी।आये...

6। मन श्रीनिवास भज
मन श्रीनिवास भज रे।टेक।
होय परम कल्याण तुम्हारे, चरणन जाय परे।।**1**
लक्ष्मीमाता पास खड़ी हैं, तव तुम काह डरे।।**2**
युगल चरणहिं उपाय तुम्हारे, सव दुःख दूर करे।।**3**
नारायण के ध्यान धरे से, सव विधि काज सरे।।**4**
दीनन हित वैकुण्ठ छाड़ि के, वेङ्कट गिरि पधरे।।**5**

7। मोहि रङ्गनाथ अपनाये

मोहि रङ्गनाथ अपनाये। टेक।
परम दयालु कृपा करके प्रभु, अपने शरण वुलाये। ।1
मन्त्रराज द्वय चरम मन्त्र को, सव विधि से सुनवाये। ।2
सुन्दर चरण उपाय वताकर, अरचि राह दिखलाये। ।3
ऐसी कृपा दीन पर करि हरि, दुरित दूर भगवाये। ।4
मोहि रङ्गनाथ अपनाये।

8। कृपालो हे कृपा

कृपालो हे कृपा करके प्रभो क्यों ना चिताते हो।
वहुत अपराध जन्मों से किया है मोह के वश हो।
तुम्हारे देखते सवहीं वहिर अन्तर निवसते हो।
करुणाकर करुण वश हो क्षमा कर दे तु सकते हो।
यही है दीन की आशा सतत लखते ही रहते हो।
हमारा कर्म तव देखो नरक वाइस वनाना हो।
निजी गुण को लखें भगवन अपर अपवर्ग लाना हो।
वचना जो वहुत श्रम से हटा दो ही क्षमा करके।
गुणन गण में वही है जो अविज्ञाता कहाते हो।

9। वरद रइया सब

वरद रइया सव देले वनाय। टेक
चौरासी में भ्रमित श्रमित लख कृपादृष्टि प्रभु करके चिताय। वरद...
करुणा कर नर देह वनाय भव से तरण कर सुलभ उपाय।वरद...
अशरण शरण सुयश संभारे हरि दोउ चरणन दिन्ह धराय।वरद...
अस प्रभु मोहि दीन अपनाये तेहि कारण दीनवन्धु कहाय।वरद...

10। वरद रइया मग

वरद रइया मग देले दिखाय।टेक
भाष्यकर के सम्वन्धि वन तुम सोवहुँ भव भय को भगाय।वरद...
नारायण के चरण शरण एक भव से तरन कर सिद्ध उपाय।वरद...
दृढ़पन करि हरि दिन्ह अभय वर मा शुच पद प्रभु दिन्ह सुनाय।वरद...
दीन जनन के तारण कारण सदा रहे करि गिरि पर छाय।वरद...

11। बना है विश्व में

वना है विश्व में सवको वरद के वरद हस्तों से ।
यही सव वेद गाते हैं सकल मिल एकहीं स्वर से ।।

वना सुक वामदेवों को वरद ही के वनाने से।
सुधारा वाल धुव को भी वरद ने वरद हस्तों से।।
वना जैसे विभीषण को वरद के वरद हस्तों से।
वना जैसे सुदामा को वरद के ही वनाने से।।
वने वैसे विदुर घर ही वरद के वरद हस्तों से।
अकिंचन दीन को सव दिन वनाये वरद हस्तों से।।
वना है जनन को सव दिन वरद के वरद हस्तों से।
वना उस गिद्ध को सवसे वरद के हस्त से जैसे।।
वनेगा दीन को वैसे वरद के वरद हस्तों से।

12। रङ्ग रइया ये

रङ्ग रइया ये करुणा नजर से चिताय
हो के करुणाकर जी ठाने निठुरइया
रङ्ग रइया ये हमनि के कवन उपाय ।।**1**
वेद सव तोहि नेति नेति कहि गावै
रङ्ग रइया ये प्रभु रूप अर्चा वनाय।।**2**
छोड़ दिव्य लोक अरू अवधि नगरिया
रङ्ग रइया ये रहले दक्षिण दिशि जाय।।**3**
वाहर भीतर रह के करे रखवरिया
रङ्ग रइया ये अव जनि रहतू भुलाय ।।**4**
दीन हीन दास तोर तुहीं मोर स्वामी
रङ्ग रइया ये कहु पग धरन उपाय।।**5**

13। अर्चारूप बनकर अपनी

अर्चारूप वनकर अपनी सुलभता दिखाओ रङ्ग रइया।
ईक्ष्वाकू पर कृपा किये प्रभु कुल से पुजायो ।।**1**
कौसल्या जव पाक वनाई अपने मन खायो।।**2**
पुनि दो वालक देख देख डेराई स्वरूप दिखाओ।।**3**
रघुपति से लङ्कापति पाये दखिन दिश आयो ।।**4**
गङ्गा कावेरी की गोदी तुमहीं मन भायो।।**5**
राग भोग सैया सुखदाई वितान वनायो।।**6**
पान किये योगी वाहन को सुतन में मिलायो।।**7**
यह जन वत्सलता गुण तुम्हरे सुविरद वढ़ायो।।**8**
दीनन पर चरणों की छाया सदाहि वचायो।।**9**

14। दया दरसाये रङ्ग

दया दरसाये रङ्ग रइया
रङ्गनायकी के सङ्ग आके । दया...
यह जन वत्सलता गुण तुम्हरे सुअर्चा वनाये। । दया...
भाष्यकार के सव जन गन को चरण में लगाये। । दया...
श्रीस्वामी कुरेश के वर दे दीनहुँ अपनाये। दया...
सव कल्याण गुणन गण तुमरे । न गन हूँ गनाये। दया...

15। देखन चलिये रङ्गवर

देखन चलिये रङ्गवर की सवारी । । टेक
सुरतरु वाहन अधिक सुहावन तापर रङ्गनाथ पगधारी। **1**। देखन...
आगे चतुर वेद पाठक गण पाछे प्रवन्ध सुरस ध्वनि न्यारी। **2**। देखन...
आलवार आचारिन वीथिन सवकी सन्निधियों में अधिक तैयारी। **3**। देखन...
सव भक्तन के घरनिन विविध भाँति नैवेद संवारी। **4**। देखन...
द्वार द्वार सव चौके पूरी नीराजन लिये हाथ में थारी। **5**। देखन...
आड़ा विविध ताल से वाजत तैसीन फीरीहुँ की पिहकारी। **6**। देखन...
महामेघ डंमर दो झलकत युगल काहली की ध्वनि भारी। **7**। देखन...
प्रति वीथिन में करूणाकर हरि दर्शन देहि दीनन हितकारी। **8**। देखन...

16। रङ्ग न लगा श्रीरङ्ग

रङ्ग न लगा श्रीरङ्ग का तुम नाहँक वना वेढंग का। ।
दशो दिशा में व्यर्थ ही धाया रङ्गपुरी में कवहु न आया
मिथ्या चाल कुरंग का। **1**। तुम...
कावेरी गङ्गा न नहाया वह पवित्र जल तनिक न पाया
भूला यम के दण्ड का। **2**। तुम...
रङ्गनाथ पगतर न गिरा जो चरणामृत नहि पान किया सो
लगहिं लात वजरङ्ग का । **3**। तुम...
माता रङ्गनाथ को जानो रङ्गावरहिं पिता कर मानो
वचन ये वेद वेदान्त का । **4**। तुम...
त्रिगुणों के घेरा में पड़कर त्रिविध ताप ज्वाला में जलकर
जैसा हाल पतङ्ग का । **5**। तुम...
श्री रङ्गेश चरण मन धर कर दीनवन्धु के नाम सुमिरकर
महिमा लहत सतसङ्ग का। **6**। तुम...

17। रङ्गनाथ मम नाथ

रङ्गनाथ मम नाथ प्रभो अव ना तुम छोड़ो जी।

रक्षक पिता सखा भर्ता पति ज्ञाता भूति अधार रमापति
हौं शेषी गुरुदेव वहुत नाता जनि तोड़ो जी।1।
भोक्ता ज्ञाता प्रेरक अन्तर कहत वेद इतिहास निरन्तर
प्रभु तुम दीन दयाल दया से मुख मत मोड़ो जी।2।
स्वामी सेव्य अद्रभ्र गुणाकर सव कारण तारण भव सागर
शुभ गुण में अव आन निठुरता मत तुम जोड़ो जी।3।

18। यही वर भावै

यही वर भावै रङ्गरइया।टेक
श्रीरङ्ग पुर के भीतर हमको कुकुर्वा वनावै।
खाने को मोहि भक्तन के जूठन पत्तल ही चटावै।
प्यासे में कावेरी के पानी पीलावैं।। यही...
चतुरानन गोपुर के आगे रेती पर सुतावैं। यही...
भाँति भाँति उत्सव में वनके सुन्दरता दिखावैं। यही...
जव प्रभु परिकरमा में आवैं पीछे से लगावैं। यही...
मङ्गल गिरि पर आप विराजैं आगे में वैठावैं। यही...
रङ्गनायकी रङ्गनाथ प्रभु अपना वनावै। यही...
तुम स्वामी हो अन्तर्यामी अपने अपनावैं। यही...
यह तन रङ्गपुरी में छोड़ा के चरण में लगावैं। यही...
नित्य मुक्त वैष्णव गण सङ्ग में सेवन समुझावैं । यही...

19। लक्ष्मीनाथ के आसन

लक्ष्मीनाथ के आसन भवन वनके रहे पहले ।
प्रभु सो राम सीता के सुनायक भी कहाये हैं।।1
गोकुल कृष्ण के भैया जो वलदाउ कहाये हैं ।
प्रभु यह घोर कलि में आ जगत गुरु ही कहाये हैं।।2
पुनः अवतार धर करके सुजामाता कहाये हैं।
सुभगवत धर्म को सव विध दशो दिशि में वढ़ाये हैं।।3
पुनः सो दिव्य तनु धर के गोवर्धन को पधारे हैं।
सुवृज में वास कर सव विध सुधर्मो को चलाये हैं।।4
श्रीराजेन्द्र सूरी वन अनेकों देश को तारे।
प्रभु आकर मगह में दीन के स्वामी कहाये हैं।।5

20। हरि के नित शेष

हरि के नित शेष रहैं जो वहाँ पयसागर से चले आये यहाँ।1
इमली वन के वन छाये यहाँ नर देह ते कोटर आय महाँ।2

जन के हित ले अधिकार वहाँ पुनि कान्तिमती के कुमार यहाँ।**3**
सोई भाष्य किये भव सेतु महाँ किन्ह जीवन के उपकार यहाँ।**4**
तन के धर के वहुवार यहाँ कर पापिन केर उधार महाँ।**5**
कल्याण गुणों के आगार महाँ सव जीवन केर उधार यहाँ।**6**
तिनके चरणों धर के गिर के चलिहौं भवसागर पार वहाँ।**7**
सोई आस भरोस यही मन में भगवान अहैं रहिहौं तहवाँ।**8**
सव दीनन गे जिनके वनके तिनके वनके अव जाउँ वहाँ।**9**

21। अबहुँ हँसि हेरो
अवहुँ हँसि हेरो रङ्ग राया
रङ्ग चरण आश्रित मम कानहु
सो अणन वरवरमुनि चेरो।**1**।
ते पुनि भाष्यकर पद सेवक
सो प्रभु महापूर्ण पद नेरो।**2**।
वह भय यामुन मुनि कर पायक
तिन शिर आळवार कर फेरो।**3**।
तिनको सेनाधिप पद जानहु
सो सेवक श्री श्रीपद केरो।**4**।
श्रीकल्याण गुणन की खानी
संतत वसत हृदय मह तेरो।**5**।
1 श्री वृन्दावन॔ श्रीरङ्गाचार्य ः ।
2 श्रीरङ्गाचार्य चरणः श्रीराजेन्द्र देशिका ः ।
3 तस्याश्रित ः शरणगतोऽस्मि। तद्वेतो ः
विकसित मुख पङ्कजेन मामवलोकय ।
यथा ः
रामानुजांघ्रि शरणोऽस्मि कुल प्रदीप ः ।
त्वासीत्सयामुन मुने ः स च नाथ वंश्या ।।
वंश्य ः पराङ्कुश मुने ः स च सोऽपि देव्या ः।
दासस्तवेति वरदोऽस्मि तवेक्षणीय ः ।।

22। अपने दयालु स्वामी
अपने दयालु स्वामी अपना वनाये हरि करुणा वश होके
सव दुःख दूषण दुराय हरि करुणा वश होके।।**1**।।
द्वय मंत्र राज चर्म सवहि सुनाये हरि करुणा वश होके।
धर कर चरण में लगाय हरि करुणा वश होके।।**2**।।
स्वस्वरूप पर रूप तेहि में वताय हरि करुणा वश होके।

एक कह चरण उपाय हरि करुणा वश होके। ।3। ।
साधन विरोधी फल सिद्धहुँ उपाय एक हरि करुणा वश होके।
अरु सव दुर विलगाय हरि करुणा वश होके। ।4। ।
कोरवा धरत प्रभु लोरवा पोछत कर करुणा वश होके ।
मा शुच पद समुझाय हरि करुणा वश होके । ।5। ।
अस दीनवन्धु प्रभु दीन अपनाये अति करुणा वश होके ।
तव दीनवन्धु कहलाय एके करुणा वश होके । ।6। ।

23। गिरा हूँ आ चरण

गिरा हूँ आ चरण में तो पड़ेगा राखना तुमहीं। टेक
हौं यदि आपके हम जो यही वेदान्त गाता है।
हमारी प्रार्थना सुननी पड़ेगी ही सभी तुमहीं । ।1। ।
सुने हो द्रौपदी रोदन हटाये नाग के वन्धन।
वही करुणा विवश होकर पड़ेगा तारना तुमहीं। ।2। ।
हमारे एक हो तुमहीं न जानो और के कवहीं।
हृदय में खोज देखोगे मिलेगा सत्य ही तुमहीं। ।3। ।
अभय वरदान दीनों है सुसाक्षी भाल वन्दर हैं।
तथा माशुच वचन को भी पड़ेगा राखना तुमहीं। ।4। ।
हमारी आपकी सव विधि अनेको नातेदारी है।
इसे ही दावदारी है पड़ेगा मानना तुमहीं। ।5। ।

24। श्रुति सत्य वचन

श्रुति सत्य वचन हरि चाहेंगे तो निर्हेतुक अपनावेंगे।
हरि अपना हमें वनावेंगे तो अशरण शरण कहावेंगे।
यदि हमारे और चेतावेंगे तो करूणा सिन्धु कहावेंगे।
और अधम उधारण हैं प्रभु जो तो पहले हमें उधारेंगे।
पतितों के तारण चाहेंगे हमरे पहले प्रभु तारेंगे।
अपने जन को यदि खोजेंगे तो हमरे नाम उचारेंगे।
प्रण राखन को प्रभु चाहेंगे चरणों को हमें धरावेंगे।
यदि हमरे जो प्रतिपालेंगे तो प्रणत पाल कहलावेंगे।
हमरे से दीन निवाहेंगे हरि दीनवन्धु कहलावेंगे।

25। करके कृपा कृपानिधान

करके कृपा कृपानिधान कृपासिन्धु यों किये।
श्रीचरण के समीप ही वल से वुला लिये। ।1। ।
हृदय निवास करके मन को मना लिये।
छिन छिनहि आप अपने चिन्तन करा लिये। ।2। ।

करतूति कालिमा को मन से मिटा दिये।
यह दीन से दयालु दीन वन्धुता किये।
भली भाँति कृपा करके अपना बना लिये।।**3**।।

26। श्रीवेंकट गिरि पर
श्रीवेंकट गिरि पर से तारने को वहती है संसार।टेक।
श्रीनिवास के हृदय सरोवर करुणा सहस्त्रों करके धार ।।**1**।।
कोन कोन दक्षिण दिशि भरके उमड़ी उमड़ी के वार वार।**2**।।
अमृत वाहिनी सव जीवन के है श्रीभाष्यकार के प्रचार।।**3**।।
सोइ सरिता पावन वृज आइ अति पावन गोवर्धन पहार ।।**4**।।
पूर्व दिशा को तारन धायी पहुँची आके मगह मझार ।।**5**।।
श्रीराजेन्द्रसूरी चरणन एक देख लेहुँ नयन पसार।।**6**।।
ग्राम तरेत ठाम एक सुन्दर हो तहँ जीवन के उद्धार ।।**7**।।

27। हे आरत हरण
हे आरत हरण मैं शरण में गिरा हूँ । टेक।
दिये हो वचन की उवारेंगे भव से।
उसी से तुम्हारे भरोसे रहा हूँ ।।**1**।।
उवारो नहीं नाथ झूठे वनोगे ।
अयश हो न तुम्हरे इसी से डरा हूँ।।**2**।।
भगे हैं गरूड़ का अकेला परे हो।
सुदर्शन भुलाते न कवहुँ सुना हूँ ।।**3**।।
क्या वह निठुरता दया सिन्धु सोख्यो।
मैं सफरी तड़पते तलफते रहा हूँ।।**4**।।
करूणामयी माता खवर क्यों न लेती।
ढनकते लुढ़कते चरण में गिरा हूँ।।**5**।।
सव ग्रन्थ गाता तुम्हें दीन प्यारे।
सुयश सुन तुम्हारे हि अरनी अरा हूँ।।**6**।।

28। हे अम्ब तेरी करुणा
हे अम्व तेरी करुणा जग को जगा रही है।टेक ।
जिसके अभाव से ही जग उनमुनी नहीं थी।
सीकर सुपात होते शाखा निकल रही है।।**1**।।
किञ्चित कृपा तुम्हारी सव लोक को वनाकर ।
नित नव विचित्र सव विध शोभा वढ़ा रही है।।**2**।।
यह सूर्य चन्द्र ऐसे सव लोक के सितारे।

सवही प्रभा तुम्हारी यह जगमगा रही है।।3।।
कोना कटाक्ष केरी पल पल वदल वदल कर ।
भगवान के हि सारी सृष्टि वना रही है।।4।।
तुम करुण वचन सुनकर निज नाथ को सुनाती ।
गुण को वढ़ा वढ़ा कर अवगुण जला रही है।।5।।
सव काल निकट रहकर भगवत पदों को सेवै।
वैसे ही जनगणों से सेवा करा रही है।।6।।
छोड़ी कमल व्योमन पयनिधि प्रभु हृदय को।
यह दीन के लिये ही धरनी से अवतरी है।।7।।
तेरी दया उदधि सम रघुनाथ की रतनाकर।
अकिञ्चन जन पर गिर संगम वना रही है।।8।।
तीन वार अम्वे भगवान से विलग हो ।
भोगत्व पारतन्त्रता शेषत्वता कही है।।9।।
अनायास कभी करुणा जिस जीव पर परे जो।
उसको ही हरि चरण में धर के लगा रही है।।10।।
विधि हर पुरन्दरों ने करते चरण की आशा।
तेरी कला कला में हलचल मचा रही है।।11।।
हे जननि तेरी महिमा दुःख दूर से हटाकर ।
सुख सम्पति मिलाकर छिन छिन सजा रही है।।12।।
अर्घ उर्ध्व स्वर्ग नर्क देव मनुज रचकर ।
वह कल वल से कैसी चक्री चला रही है।।13।।

29। बड़ी मातु की

वड़ी मातु की वड़ाई वढ़के त्रैलोक छाई।टेक
रघुनन्दन गये वन में लग संग ही सिधाई।
वनिता गणों की शिक्षा करके सभी दिखाई।।1
तृण वान के लहर से वह प्राण विकल होकर ।
चरणों में आ गिरा तो शिर काक को वचाई।।2।।
जव चाहे वजरंगी सव निश्चरी संहारन ।
तव करुणा वस में होकर सवको लई वचाई।।3।।
श्रीराम की प्रतिज्ञा सुन मन में अकुलाई।
रावण को सिखाने को वह लङ्क में सिधाई।।4।।
वह पापी नहीं माना तव मन में पछताई।
दै आग की परीक्षा हरि संग अवध आई।।5।।
निर्हेतु तेरी करूणा जव दीन पर सिधाई।
वह तुरत दीनता को निरमूल कर दिखाई।।6।।

30। नेक करुण नजरिया

नेक करुण नजरिया वरद वल्लभे । टेक ।
जगमगात तव ज्योति जगत में । अग्नि चन्द्र रवि तव कलभे। ।**1**। । ये वरद वल्लभे
दुहू देविन के अग्रभाग रह । भक्त जनन के अधिक सुलभे। ।**2**। । ये वरद वल्लभे
लीला वरदराज तव देखे। सर्व स्वतंत्र सवल कलभे। ।**3**। । ये वरद वल्लभे
जनहित करिगिरि पर आयी तुम। जनक वरद तु जननि वल्लभे। ।**4**। । ये वरद वल्लभे
त्रिगुण खेल हरि के मन भावत । चरण धरन के प्रवल वल्लभे। ।**5**। । ये वरद वल्लभे
इन्द्र तनय सम मोहिं विलोकहुँ । लहन विराम कतहु पलभे। ।**6**। । ये वरद वल्लभे
तव चरण में धाय गिरा हूँ। जरत जगत में नगन सलभे । ।**7**। । ये वरद वल्लभे
एक वार टुक मोहि निहारो । दीन के ओर तनक पलभे । ।**8**। । ये वरद वल्लभे

31। माता की कृपा

माता की कृपा दृष्टि नवजात पर पड़ी।
नहिं पलकहुँ गिराकर टक से चिता रही। ।**1**। ।
धर कोमल सव अंग संभार कर रही।
जनु लेके नवजात को उपजीव्य दे रही। ।**2**। ।
कहुँ हाँथे लै गोदी से अंक लगाती।
जो मुग्धता अति शिशुको करुणा वढ़ रही। ।**3**। ।
अति मातु की वत्सलता मन को झुका रही।
वह गाढ़ी अति करुणा माता हि वन रही। ।**4**। ।

32। लेन खबरिया मेरी

लेन खवरिया मेरी मातु जानकी । टेक ।
लंकहि दहन करन जव लागे
सीतल आग करी हुनमान की । ।**1**। ।
रजनीचरी को मारन चाहे
वह आज्ञा न दयी हनुमान की । ।**2**। ।
इन्द्र तनय का अघ नहीं मानी
दोनों चरण धरी भगवान की । ।**3**। ।

ःदोहा ः

जन के हित वन के चले घोर लंक में आय।
विविध भाँति उपदेश दे धरती माँह समाय । ।

33। प्रभो हमसे अधम

प्रभो हमसे अधम को जो उवारो तो सुयश होगा । टेक ।
गिरा हूँ आ चरण में जो न तारो तो अयश होगा। ।**1**। ।

महालक्ष्मी वचावेंगी चहौं जो कर्म भोगाने।
यही लेकर हरे अपने परस्पर में वहस होगा।।2।।
धरोगे पक्ष वेदों का धरेगी पक्ष ही गुण को।
अपाने पक्ष टुटन पै घरेलु वैमनस होगा।।3।।
अये प्रभु दीनवन्धु हो वताते सत्य साक्षी जो।
हमारे कष्ट से भी तो वचाना भी अवस होगा।।4।।
सुकोमल हृदय के कारण दया जव देख आवेगी।
इसी से घोर संकट से वचाने को विवस होगा।।5।।
सुगम से सुगम है मारग यही मन में विचारो जो।
मिटेगा द्वन्द ही सव जव अभय कर शिर परस होगा।।6।।

34। प्रभु दीनबन्धु दीन

प्रभु दीनवन्धु दीन हित ही कहायो स्वामी ।
कहो जग दीन मोरे सम कहाँ पाओगे।।1।।
अधम पतित प्रभु कोइ मोरे योग नाहीं।
तारोगे न नाथ तो सुयश कहाँ पाओगे।।2।।
आगे हुँ अजामिल ते गिद्ध गणिका ते वड़।
अघ लख केही मुहि नाते अपनाओगे।।3।।
नीचन के तारे से विरद वड़ तोर प्रभु।
मोरे हुँ उवारे अति कीरती कमाओगे।।4।।
तेरे एक आस औ भरोसा नहीं दूसरे को।
चरण धरे से कहो कैसे के हटाओगे।।5।।

35। प्रभो पापियों को

प्रभो पापियों को वनाते न आते
तो पावन सुयश तुम कभी भी न पाते।टेक
सभा मध्य में वह जो गाली सुनाया।
सो शिशुपाल को आप तन में मिलाया।।1
तथा व्याध को भी विधाते के नाते।
तरी वह गणिका सदन और अजामिल।।2
किया घोर जो पाप सो काहु न माना।
वचा नर्क से एक नामो के नाते।।3।।
तुम्हें वक वकी कंस भी मारने का
किया था यतन तु मति सी तारने का।।4
किये हो यतन एक वैरी के नाते।
गौतम त्रिया जो जो प्रिया पाप की थी।

वह पत्थर वनी आइ भू पर परी थी।
उसे तुम सुधारे मुनी को दिखाते।।5।।
दयालो सदा तुम दया वस में होकर
जटायु उवारे हो पापों के नाते।
हैं भक्त तुम्हारे इसी गुण को गाते।।6।।
यही चाल की एक आशा हमारी
न जायेंगे कभी भी किसी के दुवारी।
औ तुमसे तरेंगे ही चरणों में आते।।7।।

36। हे प्रभो नेक

हे प्रभो नेक मन में विचारो नहीं ।
पतित जन के लिये पतित पावन वने।
हौं कहो नाथ सो याद है या नहीं।।1।।
विप्र गौतम की घरनी अहिल्या रही।
पाप मयी जो परी सो तरी की नहीं।
क्या उसे कर्म से भी घिनाये कहीं।।2।।
वहुत आजन्म से पाप करती रही।
नीच नारी अधम जात में तन धरी।
ऐसी गणिकाहु तुम से तरी की नहीं।।3।।
जन्म से नित्य क्या क्या पचाता रहा।
नीचे से नीच तुर्का कहाता रहा।
आप ऐसे के निजपद दिये कि नहीं।।4।।
जैसे योगी मुनिन भक्त तरते गये।
भाव सेवन भजन नित्य करते गये।
तुरत जाकर मिला सोई सदना तहीं।।5।।
तिन अधम से अधम हम कभी कम नहीं।
नाथ वह नियम से आप टलते नहीं।
है भरोसा कि मैं भी तरेंगे सही।।6।।

37। दर्शन दिन्यों भगवान

दर्शन दिन्यों भगवान जन जान के।अपने अपना मान के हरि । टेक।
लक्ष्मी माता मोहि चितायो। यह कह भगवत को समुझायो।
प्रभु शरण में आया लेके प्राण के।।1।।
सन्मुख में करूणानिधि देखे । अपने दासन में करि लेखै।
दोनों चरणों वतावैं जन जान के ।।2।।
माशुच कहते हैं सुरनायक । अव तुम हौ हमरे निज पायक।

रखिहौं करके मैं अपने विधान के ।।3।।
चरणन देखत नयन जुड़ायो।मन के तीनों ताप मिटायो।
धर कर चरण हृदय में भगवान के।।4।।
जिनके दीन सदा मन भायो । ऐसे कह के वेद बतायो।
तैसे वचन है सवही पुराण के।।5।।

38। अपना दयालु प्रभु

अपना दयालु प्रभु के दरसन करवई कव वेंकट में जाके।
कैसे दोनों नयन जुड़ायव कव वेंकट में जाके ।।1।।
अपने दयालु प्रभु के हृदये टिकायव कव वेंकट में जाके।
चरणहि मनवाँ लगाय कव वेंकट में जाके।।2।।
अपना दयालु प्रभु के मथवा नेवायव कव वेंकट में जाके।
यह दोनों अखियाँ वहायव कव वेंकट में जाके।।3।।
अपने दयालु प्रभु के भोगवा लगायव कव वेंकट में जाके।
सव नैवेदवा वनाय कव वेंकट में जाके।।4।।
अपना दयालु प्रभु के आरति उतारव कव वेंकट में जाके।
दोनों कर धर के घुमाय कव वेंकट में जाके।।5।।

39। अपने दयालु प्रभु

अपने दयालु प्रभु जी दरसन देतन कव वेंकट से आके ।
दिन हित करुण चिताय देतन कव वेंकट से आके ।।1।।
अपने दयालु प्रभु जी चरण धरवतन कव वेंकट से आके ।
वड़ वड़ हँथवा वढ़ाय कव वेंकट से आके ।।2।।
अपने दयालु प्रभु जी संगहि लगवतन कव वेंकट से आके ।
सव विध अपन वनाय कव वेंकट से आके ।।3।।
मोर मोर कहु प्रभु जी संग वइठवतन कव वेंकट से आके ।
शिर धर कर अपनाय कव वेंकट से आके ।।4।।
परम दयालु प्रभु जी टुकहुँ विलोके कव वेंकट से आके ।
करुण नयन सितलाय कव वेंकट से आके ।।5।।

40। श्रीनिवास मोरे प्रभु

श्रीनिवास मोरे प्रभु जी । नर तन देलन ये करुणावश होके ।
यह भूमि भारत वसाय ये करुणावश होके ।।1।।
अपने दयालु प्रभु जी कर धर लेलन ये करुणावश होके ।
निज जन संग में लगाय ये करुणावश होके ।।2।।
अपने दयालु प्रभु जी जोतिया दिखवथी ये करुणावश होके ।

घोर घन तिमिर हटाय ये करुणावश होके ।।3
अपने दयालु प्रभु जी कटलन वन्धनवाँ ये करुणावश होके ।
सव विध लेके अपनाय ये करुणावश होके ।।4।।
अपने दयावस होके चरण वतावैं जी करुणानिधि मोरे।
एही एक कह के उपाय ये करुणावश होके ।।।5।।

41। नित ही दयालु

नित ही दयालु प्रभु के टहल वजायेव कव वेंकट गिरि रह के।
साम और सवेरे दोनों साम कव वेंकट गिरि रह के।।1।।
श्रीनिवास श्रीनिवास रटन लगायेव कव वेंकट गिरि रह के।
नित नित आठो जाम कव वेंकट गिरि रह के।।2।।
दिन प्रति झारू ले के गलिया वहारव कव वेंकट गिरि रह के।
साम और सवेरे दोनो साम कव वेंकट गिरि रह के।।3।।
भोरे ही सनिधि जाके दरसन करवो कव वेंकट गिरि रह के।
साम और सवेरे दोनो साम कव वेंकट गिरि रह के।।4।।
तुलसी कुसुम लेके नित पहुँचायव कव वेंकट गिरि रह के।
तीरथ परसादी माँगी नित नित पायव कव वेंकट गिरि रह के।
साम और सवेरे दोनो साम कव वेंकट गिरि रह के।।5।।

42। अपने से नाथ

अपने से नाथ वनाना पड़ेगा।टेक
समय सुहावन सोई जव चाहो धमनी हमें धराना पड़ेगा।।1।।
तुमरी कृपा मिलन की आशा अतिवाहिक भेजवाना पड़ेगा।।2।।
माया कृत को दूर भगाकर सव विधि से अपनाना पड़ेगा।।3।।
नित्य मुक्त जन संग जहाँ प्रभु परिजन वहाँ वनाना पड़ेगा।।4।।
श्री भू नीला मिल जस सेवैं । तस सेवा हरि लेना पड़ेगा।।5।।

43। अय भगवन यह

अय भगवन यह कोइ न जाने कव कैसे अपनाये हो ।
गणिका सदन अजामिल ऐसे को वैकुण्ठ वसाये हो।।1।।
ऊधव औ गोपिन का रोदन एक हृदय नहीं लाये हो।
कौरन कंजर कोलन के घर जा जा कर अपनाये हो।।2।।
यवन कहा हा राम विवश हो तेहि निज धाम पठाये हो।
दशरथ राम करुण रट लायो सुर पुर माँह टिकाये हो।।3।।
दशरथ से परिचय नहि था क्या यवन कवन उपकारी हो।
दरसन दे सवरी को तार्यो मातन भले रुलाये हो।।4।।

मुनि गण सव तुम्हरे नहीं हैं तुम दीन वन्धु कहलाते हो।
ज्ञानीजन को ठुकराकर तुम अधमन धाम वुलाये हो।।5।।
खोज खोज गुंजा जंगल से माला गले वनाये हो।
अंजलि भर मुक्ता मणि गण से वैर वदल ले आये हो।।6।।

44। पहुनाई मनमाना प्रभु

पहुनाई मनमाना प्रभु जी पहुनाई । टेक ।
जंगलिन कोल किरात भील गण तिनके घर पहचाना प्रभु जी।
यह कछु वड़ी वात नहि तुम्हरे ऐसे कृपा निधाना। प्रभुजी पहुनाई मनमाना।।1।।
कन्द मूल फल विविध भाँति के दोन भरि भरि आना।
ते तुम खात सराहत वहुविध औ थोरो लै आना। प्रभुजी पहुनाई मनमाना।।2।।
पुनि पुनि कह मृदु वचन लखन संग सिय यह अमिय समाना।
कहाँ से लायो कहाँ होत है कैसे यह पहचाना। प्रभुजी पहुनाई मनमाना।।3।।
पाहुन हो दीन ही के सवन यह रहस्य कोउ जाना।
सो दीन पियारे तुम्हरे को दीनन के घर जाना। प्रभुजी पहुनाई मनमाना।।4।।

45। कवन जाने कैसे

कवन जाने कैसे रीझे गोपाल। टेक।
ज्ञानी ध्यानी को चाहत नाहीं काहे जोलहवा पर कइले खयाल।।1।।
ऋषि मुनि गण सव खोज के हारे सो कैसे मलहवा के मिलले कृपाल ।।2।।
गोकुल छाड़ि द्वारिका भागे रोवत रोवत गोपी भइले वेहाल।।3।।
चारों पदारथ को नहीं चाहे तइयो सुदामा के कइले नेहाल।।4।।
पितुहि मरण सुनि जस दुःख पायो। जादे जटायु ला कइले मलाल।।5।।
वैदिक ब्राह्मण को नहीं खोज्यो । शवरी मइया कहके कइले गुदाल।।6।।
श्रीसाकेत अवधपुर छाड़यो।शवरी मड़इया में दशरथ के लाल।।7।।
श्रुति पुराण सन्तन जन गावैं। सवहीं दीनन प्रिय दीन के दयाल।।8।।

46। राम चरणों में

राम चरणों में जाके लगेंगे।
देह देहि के भार राम पद दै निर्द्वन्द रहेंगे।।1।।
दुर्जन संग से दूर भागकर एक अकेले रहेंगे।।2।।
कवहुँक मठ कवहुँ मन मठ में वैठे मौन रहेंगे।।3।।
कंठ में ठाकुर हाथ सुमिरनी संतन संग चलेंगे।।4।।
वोलूं तो संतन संग वोलूं ना तो मौन रहेंगे।।5।।
मा शुच पद के भाव हृदय धर मन में मगन रहेंगे।।6।।
सव विध सिद्ध उपाय हमारे अव का पच पच मरेंगे।।7।।

47। है बड़ी भगवत

है वड़ी भगवत जन की आशा।
इनके पद तीरथ के तीरथ कहत धर्म इतिहासा। ।**1**
इनके पद पावन के पावन करत फिरैं सव आसा। ।**2**
इनके पद सरोज के पीछे धावत रमा निवासा। ।**3**
इन पद की महिमाँ वह सवविध जानतु हैं दुर्वासा। ।**4**
व्रत जप तप कर योग यज्ञ वहु कोउ ज्ञान हि के प्यासा। ।**5**
दीन सदा हरि जन पद पनही केर करत इक आशा। ।**6**
हरि विमुखन गुरु विमुख लही गति यह अनेक इतिहासा। ।**7**
हरिजन विमुख लहि न काहु गति इन्हें सदा यम त्रासा। ।**8**

48। हमारे दीन जन

हमारे दीन जन पर कव कृपा करके चितावोगे।
अपने दिव्य चरणों में प्रभो अव कव लगावोगे। ।**1**। ।
सुना पावन विरद जव से लगी है आसरा तव से।
अपाने योग अपने से प्रभो अव कव वनावोगे। ।**2**। ।
सो पावन पाद कमलों को तू मछुओं से धुलाये हो।
प्रभु वह दिव्य को कव दो तु आकर के दिखावोगे। ।**3**। ।
अकिञ्चन दीन ही तुम्हरे सदा से प्यारे लगते हैं।
हमारे अस जगत में ही कहीं ढूंढे न पावोगे। ।**4**। ।
कहाते दीनवन्धु हो प्रणत जन पाल औ तैसे।
कहो यह नाथ अपने से सुयश कैसे नशावोगे। ।**5**। ।

49। अपने से नाथ बुलाना

अपने से नाथ वुलाना पड़ेगा। टेक
समय सुहावन सोई जव चाहो कर धर धमनी धराना पड़ेगा। ।**1**। ।
तुमरौ कृपा हि मिलन की आशा अतिवाहिक भेजवाना पड़ेगा। ।**2**। ।
माया कृत को दूर हटाकर सकल विधि से अपनाना पड़ेगा। ।**3**। ।
नित्य मुक्त जन संग जहाँ प्रभो परिजन तहवाँ वनाना पड़ेगा। ।**4**। ।
श्री भू नीला जेहि विधि सेवैं । सोई सेवा हरि लेना पड़ेगा। ।**5**। ।

50। यह दीन के लिए

यह दीन के लिए दिन भगवान लायेंगे।
हरि दीन वन्धु दीनहि तुरते वुलायेंगे। ।**1**। ।
वह भेजेंगे दूत को लिवाय जायेंगे।

करुणानिधान पास दीन को टिकायेंगे।।2।।
वह नित्य मुक्त गण से चितवन हटायेंगे।
सो हि दीन पर दयालु दृष्टिकोण लायेंगे।।3।।
वह परिषद में हमरी चरचा चलायेंगे।
कर प्रेम वार वार दीन को चितायेंगे।।4।।
धर सूँघ करके माथ अंक में लगायेंगे।
भगवत हीं सव विधि से अपना वनायेंगे।।5।।
अरु करुणामयी माता अति प्यार करेगी।
ले हाव भाव चाव से दुलार करेगी।।6।।
वह वार वार गोद ले संभार करेगी।
त्यों चुम्वन औ चितवन चुचुकार करेगी।।7।।
वावू कहि लाला कहि के वुलायेंगी।
मोहि देखि वार वार ही विचार करेगी।।8।।
पाया हूँ वहुत काल पै स्वामी न माँग लैं।
नहि दूँगि तो अपने से आप ले न लैं।।9।।
व्यामोह को सम्हार कर सुधार करेगी।
दे जीवन पद सेवन स्वीकार करेगी।।10।।
तहँ नित्य मुक्तगण सव उपचार करेंगे।
सव वाजन संग अस्तुति जैकार करेंगे।।11।।
अरु गुण गण सम्भोग से सम तुल्य करेंगे।
पुनि नव विध सम्वन्ध को चरितार्थ करेंगे।।12।।

51। अब हम जायेब

अव हम जायेव हो राम। टेक।
हरि हङ्कार तुरत अव आवत
सुन के वहुत अगरायेव हो राम ।।1।। अव हम जायेव हो राम
राम नाम के साथ कलेवा
प्रेम से पावत जायेव हो राम।।2।। अव हम जायेव हो राम
वेद वीज के रथ पर वैठव
मगन से हरि गुण गायेव हो राम।।3।। अव हम जायेव हो राम
वावा लोक देन जव लगिहैं
तवहुँ कवहुँ न ठगायेव हो राम।।4।। अव हम जायेव हो राम
सातों घेर तुरत हम लांघव
वेदशीर्षहुँ नद देखव राम।।5।। अव हम जायेव हो राम
डुव डुव कर मल के हम धोअव
पुनि प्रभु माथ नवायेव राम ।।6।। अव हम जायेव हो राम

अतिशय ब्रह्म गन्ध हु सुन्दर
ब्रह्म प्रभा लख पायेव राम ।।7।। अव हम जायेव हो राम
साम गान के तान विविध विधि
सो सुन के सुख पायेव हो राम।।8।। अव हम जायेव हो राम
भेरी मृदंग काहलि के स्वर
पिहकारिन सहनाई के राम।।9।। अव हम जायेव हो राम
तिरमाली वीथिन के वाहर
भीतर चौका पुरायेत राम।।10।। अव हम जायेव हो राम
छत्र चौर उपचार अनेकों
कलस द्वार सजायत राम।।11।। अव हम जायेव हो राम
चोवा चन्दन इतर अर्गजा
दिव्य कुसुम वर्षायेत राम।।12।। अव हम जायेव हो राम
तहँ सव दिव्य सूरि गृह जाके
वहु विधि हम पुजायेव राम।।13।। अव हम जायेव हो राम
प्रभु से मिलन सुरस रस पाके
ब्रह्म हम हुँ तहँ वोलव राम।।14।। अव हम जायेव हो राम
दिव्य अनेक देह ताना विध
मन माना जहँ पायव राम।।15।। अव हम जायेव हो राम
सर्वकाल औ सर्वअवस्था
श्रीसंग हरि पद सेवव राम।।16।। अव हम जायेव हो राम

52। दया किन्ह भगवान

दया किन्ह भगवान सन्त मोहि मिललन ये।
तव सन्त किये उपदेश शरण हरि के भये ये।।1।।
दीन्ह ज्ञान भगवान हृदयतम भागल ये।
तव तन धन से मन भगवत के चरण लगाये।।2।।
अन्तर्यामी कृपा करि धमनी धरवतन ये।
हरि अर्चि के पथ वतलवतन उपर दिखवतन ये।।3।।
अतिवाहिक देव मिलि मोहि रथ वइठवतन ये।
तव दिन पक्ष मास वर्ष पति पूजन करवतन ये।।4।।
वात सूर्य विधु चपल वरुण इन्द्र विधि पुर ये।
पुनि जायेव विरजा नहाएव तनहुँ विलायेव ये।।5।।
अतिमानव भगवान स्वरूप निज देतन ये।
तव दिव्य विमान चढ़ाई देव लै जयतन ये।।6।।
आरंग ताल नहायव गन्ध लगवाएव ये।
पुनि तिल तर भूषण वसन पहिर वनि जायेव ये।।7।।

लक्ष्मी सरोवर पहुँचव वहुरि नहायेव ये।
पुनि वहुविधि से वहुमानित ही चल जायेव ये।।8।।
नित्य सूरी तहँ मिलि सव हरि वमनि गवतन ये।
तव दिव्यलोक हम देखव शीश नवाएव ये।।9।।
पाँव पाँव हम दौड़व हावु हावु वोलव ये।
मन देखतहि भगवान हुँभर के वुलवयतन ये।।10।।
जातहि हम गिर जायेव हरि के चरण तर ये।
प्रभु चारिउ कर धर मोहि हृदय में लगवतन ये।।11।।
शिर पर कर धर पुछतन ववुआ तु कहाँ हल हो।
तव तनु कर जन्म मरण दुःख कह समुझायेव ये।।12।।
लक्ष्मी के गोद प्रभु देतन हम हँस वैठव ये।
मैया मुख चुम्वत चुचुकारत अधिक दुलारत ये।।13।।
हृदय के जलन वुतायेत शान्ति सुखद जल से।
अति मोद उछाह प्रवाह सुनेह निवाहन ये।।14।।
सेवन विधिहुँ वताई सेवा सव देतन ये।
तव नित नव नेह लगाइ सदा हम सेवव ये।।15।।
व्रह्मानन्द अघा के परम रस पायेव ये।
श्रीलक्ष्मीनाथ के साथ सुमाथ झुकायेव ये।।16।।

53। शुभ मन्दिर कभी

शुभ मन्दिर कभी आसन सिंहासन वन रहेंगे ही।
सुछत्रक वाद्य वादक हो कभी नर्तक वनेंगे ही।।1
व्यजन चाँवर पगन पनही विताने तन रहेंगे ही।
अहो मैं दिव्य चरणन पादुका वनके रहेंगे ही।।2
स्तुति प्रार्थना करके चरण लै शिर धरेंगे ही।
सुसेवन के लिए अभ्यर्थना छन छन करेंगे ही।।3
स्वरूपों रूप गुण गण को सदा गायन करेंगे ही।
सुपूजक हो सदा परिजन तहाँ वन के रहेंगे ही।।4
मनहिं माना अनेको दिव्य तनु धर के रहेंगे ही।
तिनहु अम्व के हरिसंग पगतर जा पड़ेंगे ही।।5
कहीं वन वाग उपवन वाटिका सुन्दर वनेंगे ही।
अनेको पुष्प औ लतिका सुहावनि तन रहेंगे ही।।6
मनभावन पखेरु मधुप रव सुन्दर करेंगे ही।
अतिशय तनु प्रभा सन्मुख अनेकों रवि छिपेंगे ही।।7
सुस्वामी दीन वन्धुहीं सभी अनुभव करेंगे ही।
दयालु प्रभु दया करके वही अंगी करेंगे ही।।8

सव विध सव प्रकारो से सुभोगादिक वनेंगे ही।
भगवत श्रीपति प्रभु जी सुभोक्ता वन रहेंगे ही।।9

54। देवन किन्ह पुकार

देवन किन्ह पुकार जगत पति सुनलन ये।
ललना भक्तन वस भगवान कृपा प्रभु कएलन ये।।1
कश्यप अदिति अवधपुर नरतन धएलन ये।
ललना तिनकर घर भगवान चतुर्भूज अएलन ये।।2
शंख चक्र अरु कमल गदा लिये शोभत ये।
ललना देख रूप अनूप विनय तव कएलन ये।।3
अदभुद रूप सुहावन अतिमन भावन ये।
ललना तवहुँ तजहु भगवान केउ न पतिअएतन ये।।4
विनय सुनत भगवान वालरूप धएलन ये।
ललना कएलन तुरत केहाँयें केहाँये सव सुनलन ये।।5
जहँ तहँ लोग लुगाई पूछे लरिकवन भेल ये।
ललना कौशिल्या केकई सुत एक एक जमल सुमित्रा दोउ ये।।6
सुनत अवध के लुगाई धाई के वधाई देत ये।
ललना भाग सराहत सव मिली सफल जनम भेल ये।।7
सुन्दर होत उछाह अवधपुर घर घर ये।
ललना देवन चढ़ के विमान सुमन वरषावत ये।।8
दान देत सनमान लोग सव विध सव ये।
ललना भए परि पूरन काम कहत सव जै जै ये।।9

55। मनुजी बनाये एक

मनुजी वनाये एक नगर अवध जहाँ सरयू वहे।
जेहि लख नरन के वड़वड़ सव अघ दूर दहे।।1
तहँ नृप दशरथ गृह प्रभु त्रिभुवन नाथ अवतरे।
श्रीनिवास शेष शंख चक्र संग दिव्य नरतन धरे।।2
कौशिल्या सुअन भगवान भये आप सव भाई में वड़े।
कैकेई कुमार शंख दिव्य तनु सोई भये भरत भलें।।3
लखन अहीश चक्र रिपुहन जमल सुमित्रा सुत ये।
वाजत वधाई घर घर सुरनर पुर अवध छये।।4
आनन्द मँगन नरनारी सवलोग जहँ तहँ सुन ये।
समय विचारी गुरुदेवजी वशिष्ठ नाम करण किये ये।।5

56। नृपति तव चार

नृपति तव चार लाला ये मुवारक हो मुवारक हो।
कौशिल्या कैकेई धन्य हैं सुमित्रा धन्य हैं जननी।
जनी ये चार लालन ये मुवारक हो मुवारक हो।। 1
अयोध्या धन्य धामों में जनन सव धन्य जो वसते।
लखे यह चार लाला ये मुवारक हो मुवारक हो।। 2
वत्सर मास तिथि अरु लग्न दिन खेचर सभी धन्य सो।
जने यह चार लालन ये मुवारक हो मुवारक हो।। 3
धन्य इच्छवाकु नगर जो अराधे रंगवर प्रभु को।
सो आये चार तन धर के मुवारक हो मुवारक हो।। 4
दीनन के हो लिए प्रभुजी धरे हैं आप नरतन को।
तिन्हूँ यह चार लालन को मुवारक हो मुवारक हो।। 5

57। लालन को लेकर

लालन को लेकर कनीयाँ के कनीयाँ।
वाजन वाजत मंगल गावत मिली मिली । घर घर के जनियाँ के जनियाँ। 1
दो श्यामल दो गौर मनोहर । शोभा अति भावनियाँ भावनियाँ। 2
काजल दे दृग मुख चुम्वत जनी । नजर न लगावै कोई जोगनियाँ जोगिनियाँ। 3
सुत सुख पाकर जगत भुलाकर । सकल ब्रह्म से रनियाँ रनियाँ। 4

58। आज उछाह अवधपुर

आज उछाह अवधपुर ये मनरजना लाल। होत नेहाल ये मनरजना लाल।
चलु डगरिन धन्य भाग तुम्हरो राजा के भये सुत चार । ये मन...
लेहों नेग जोग मनमाना जो कुछ मन में तुम्हारे ये मन...
डगरिन सुनत महल में आयी आनन्द प्रेम अपार ये मन...
वोली प्रेम मगनमयी वाणी दो रानी नेग हमार ये मन...
नैहर के धन तोहरा से लैहों राजा से और अपार ये मन...
कोशलपुर कौशिल्या से लैहों सुन्दर सरयू के पार ये मन...
काश्मिर कैकेई से सरवस यही है अरज हमार ये मन...
खोंइछा की भूमि सुमित्रा से लैहों गया के देश विहार ये मन...
जाति के चमइन वसूं अयोध्या परसो के सेवा हमार ये मन...

59। चलु चलु चलु

चलु चलु चलु सव दइया, राजाघर वधइया, भये।
चार भइया, के लेके वलइया, कहव मिली जै जै जै।। 1
राजाजी वैठे दुआरी, जुरे नर नारी, करै नेगचारी,
सकल वार वारी, कहत सव जै जै जै।

गोद में लेके ललनवाँ, भये हैं मगनवाँ, न जाने
भवनवाँ, भुलाये अगनवाँ, कहत मिली जै जै जै।
राजा जी खोले खजाना, मिलत मनमानास न कोई
विराना, सवे है अपाना, कहत मिली जै जै जै ।
सकल अवध नर नारी, चहत अवगारी, महा भीड़
भारी, राजा के दुआरी, वोलत मिली जै जै जै ।

60। मा शुच पद

मा शुच पद जेही जान लिया तेही शोचव का
भगवत भयउ उपाय भला तव शोचव का। ।**1**। ।
मंत्र युगल माला युग जाके, युगल भावना मन वस ताके
युगल चरण के ध्यान धरे, तेहि शोचव का। ।**2**। ।
उर्ध्वपुण्ड्र जाके शिर शोभत, तेहि लखि के भगवत मनमोहत
आये चतुर्भुज हृदय वसे, तेहि शोचव का। ।**3**। ।
मन्त्र रत्न जेहि जपत निरन्तर, तेहि भगवान से नहीं कुछ अन्तर
यह श्रुति सन्त पुराण कहै, तव सोचव का। ।**4**। ।
लक्ष्मी माता के दृष्टि तल होकर के, ना भुलव कवहु पल भरके
भये भगवान के प्रेम विषय तव सोचव का। ।**5**। ।

61। त्रिपाद विभूति कैसी है

भोग अर्थ वह परम व्योम लीलार्थ अखिल जग की रचना।
लीला भोग विभूति उभय सो, सुन्दर सव श्रुति की रचना। ।**1**
भोग नित्य लीला अनित्य, हरि शक्तिमान धारक इसके।
तीन चरण में उर्ध्वव्योम यह, एक चरण में सव प्रभुके। ।**2**
युग विभूति के वीच सीमा विरजा कहिके जेहि श्रति गावैं।
सदा रहत वेदान्त स्वेद जल मुक्त जननको अन्हवावैं। ।**3**
यथा सर्वगत विष्णु सदा तैसी लक्ष्मी माता रहती।
नारायणी जगन्माता यह लोक सदा धारण करती। ।**4**
जस भूदेवी पृथ्वी वनती तस नीला लीला करती है।
श्रीदेवी प्रभु के दाहिने दिशि वक्षस्थल में नित वसती है। ।**5**
इन्दीवर सम श्याममनोहर कोटि रविहुँ छिपते जिससे।
अति कोमल कुमार सुन्दर वपु व्रह्मतेज छिटके जिससे। ।**6**
फुल्ल रक्त अम्वुज सम सुन्दर अंघ्रि सरोज सुहावन है।
उनमें रेख कमलध्वज अंकुश छत्रक जन मनभावन है। ।**7**। ।
मत्सी यव अमृत घट स्वस्तिक भक्तन हृदय चुरावन है।
नयनन दो प्रवुद्ध पंकज सम भूलतिका मनभावन है। ।**8**
नाशा शुक कपोल सुन्दर सस्मित मुख कंज सुहावन है।

मुक्ताफल सम दन्तपंक्ति अरु विद्रुम अधर लजावन है। ।9
तरूण दिवाकर समकुण्डल युग कवरी कच मनभावन सी।
महावक्ष माला राजत अरु कौस्तुभ रविहुँ लजावन सी। ।10
नाभि जलज विधि जन्मभूमि गो लख मुनिजनमन मोहत है।
वालातप निभ पीत वस्त्रों सो अति सुन्दर तन सोहत है। ।11
दोउ चरण में कटक सुहावन नाना रत्न जड़े सव हैं।
नख पंक्तिन प्रकाश अति सुन्दर हिमकर कोटि छिपे सव हैं। ।12
अति शीतल जन हृदय शीत करने को ध्यान लगावत हैं।
भक्त हृदय के अंध तिमिरको निमिष में दूर भगावत है। ।13
दोउ कर शंख चक्र धारण कर मुद्रा अभय वतावत हैं।
सोलख चरणाश्रित विरोधि को चिन्ता सतत हटावत हैं। ।14
औरो दोउ कर गदा पद्म धर दिव्य स्वरूप वने रहते।
उर्ध्वलोक में नित्यमुक्त को भोक्ता भोग्य वने रहते। ।15

प्रथम परिक्रमा

पूर्व दिशा में वासुदेव श्रीरमा हुतासन दिशि शोभे।
श्रीसंकर्षण दक्षिण दिशि औ सारस्वती अस्त्रप शोभे। ।16
पश्चिम में पद्युम्न विराजत वायुदिशा रति ही गाजै।
श्रीअनिरूद्ध उत्तरदिशि भ्राजैं ईश दिशहुँ शान्ति राजै। ।17

दूसरी परिक्रमा

लक्ष्मीसह केशव विष्णु श्री श्रीधर दिशि पूर्व विराजत हैं।
दक्षिण नारायण मधुसूदन हृषिकेश तह भ्राजत हैं। ।18
माधव और त्रिविक्रम पश्चिम पद्मनाभ अति शोभ रहे।
श्रीगोविन्द तहाँ दामोदर वामन उत्तर लोभ रहे। ।19
भिन्न भिन्न सुन्दर तनु धरकर निज देविन सह रहते हैं।
दिव्यलोक में दिव्यमुक्ततन घर सव दिन सव वसते हैं। ।20
शक्ति विमला पूर्व दिशा में उत्कर्षिणी अगिन दिशि में।
ज्ञाता याम्यदिशा नैऋत में किया सुहावनि संमुख में। ।21
योग पश्चिम में वायु दिशि प्रह्वो भली विराज रहे।
सत्या उत्तर दिशि ईशान में ईशाता निज भ्राज रहे। ।22

तीसरी परिक्रमा

मत्सादिक अवतार सकल जेही वैभव कह श्रुति गावत है।
सो भगवान दिव्य वपु से तीसर में व्यूह वनावत हैं। ।23

चौथी परिक्रमा

सत्यायुत अनन्त दुर्गा सेनप गजमुख तहँ भ्राजत हैं।
शंख चक्रनिधि पद्मलोक चौथे में साथ विराजत है। ।24

पांचवीं परिक्रमा

ऋक्यजु साम अथर्व चारदिशि सावित्री संग सोहत हैं।
तन धरके विहगेंश धर्म तहँ पञ्चम मण्डल शोभत हैं।।**25**

छठी परिक्रमा

शंख चक्र धनु हल मूशल अरू पद्म गदा असि सव जो हैं।
सुन्दर दिव्य सुतमधुर करसो छट्ठें व्यूह वने सो हैं।।**26**

सातवीं परिक्रमा

इन्द्र हुतासन समनक नैऋत नीर पवन विधु जो जो हैं।
सप्तम में सकल दिशाधिप दिव्य रूपधर सो सो हैं।।**27**

द्वारपाल

चण्ड प्रचण्ड पूर्वक पालक भद्र सुभद्र भरते ।
पश्चिम में जय विजय दिव्यतनु भातृविधातृ उत्तर रहते।।**28**

दिक्पाल

प्राची कुमुद अनल कुमुदाक्षहुँ पुण्डरीक यमदिशि वसते।
श्रीवामन नैर्ऋत्य दिशाके शंकु कर्ण वारूण रहते।।**29**
वाम दिशा में सर्व नेत्र उत्तर दिशि सुमुख विराजतु हैं।
सुप्रनिषित ईशान में रहकर शोभा अधिक वढ़ावतु हैं।।**30**

भगवत्प्राप्ति के साधन

ताप पुण्ड्र जप मन्त्र परिग्रह अर्चन ध्यान सदा करना।
पद सेवन वन्दन कीर्तन व्रत अरु तुलसी रोपन करना।।**31**
नामरटन गुण श्रवण दिवस निशि वैष्णव की सेवा करना।
तीर्थप्रसाद सदा सेवन यह षोड़श भक्ति नहीं तजना।।**32**

62। श्रीनिवास भगवान की भली आरती

श्रीनिवास भगवान की भली आरती कीजै।टेक
जनहित निज पद छोड़के प्रभु भूतल आये।
ऐसे कृपा निधान की भली आरती कीजै।।**1**।।
दिव्य रूप विसराय के अर्चा वनि आये।
ऐसे दीन दयाल की भली आरती कीजै।।**2**।।
दूषण भूषण मान के जनको अपनाये।
ऐसे परम सुजान की भली आरती कीजै।।**3**।।
नित्य सूरी गण भूल के दीनन मन भाये।
ऐसे श्रीभगवान की भली आरती कीजै।।**4**।।
दीन दीन को वीन के सवहिं वुलवाये।
हरि भक्तन जन प्राण के मिलि आरती कीजै।।**5**।।

63। श्री लक्ष्मी जी (गोदा जी) की आरती
श्रीगोदा जगदम्व की भली आरती कीजिए। टेक
यह करुणामयी मातु की भली आरती कीजिए।**1**।श्री गोदा.
हरिवक्षस पंकज वन त्यागी दीन हीन आरत हित लागी।
दयामयी जगदम्व की भली आरती कीजिए।**2**। श्री गोदा.
जन दुःख सुनि भगवत्ही सुनावे अपराधी को क्षमा करावे।
यह लग हरि के संग में शुभ आरती कीजिए।**3**। श्री गोदा.
हम सब जन से सेवा लेवै श्रीहरि चरणन के नित सेवै।
सदा रंग के संग में शुभ आरती कीजिए।**4**। श्री गोदा.
दीनन लग कहुं समय न देखी करती सदा अति कृपा विशेषी।
जन समुझै सत्संग से शुभ आरती कीजिए।**5**। श्री गोदा.

अर्चा गुणगान संपूर्णम्